समाज विकास

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• अप्रैल २०११ • वर्ष ६२ • अंक ४

मतदान का महत्व
सम्मेलन का
राजनैतिक चेतना महाअभियान

'मतदान का महत्व' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में वक्तव्य रखते हुये सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया, मंचस्थ हैं पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सन्तोष सराफ, पत्रकार श्री राजीव हर्ष एवं श्री शंभु चौधरी

AMARNATH YATRA 2011

6 NIGHTS 7 DAYS

LORD AMARNATH

SONMARG

DAL LAKE

SHALIMAR GARDEN

MUGHAL GARDEN

GUL MARG

TOUR DATE

7th July onwards

BOOKING VALIDITY

30th June / Till seats last

COST INCLUDES

Return Air fare Ex-Delhi
Amarnath by Helicopter
Delux Accommodation
All meals
Sight seeing by A/c Car
Services of Tour Manager

33,000/- per person Ex-Delhi

All inclusive NO Hidden Cost

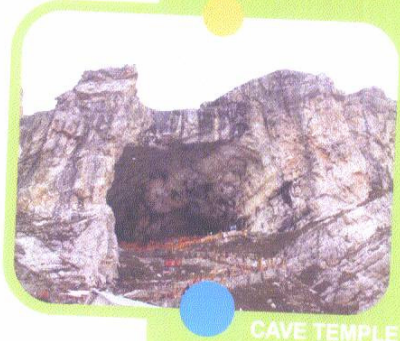

CAVE TEMPLE

Holiday Makers

Holiday Makers

NAGPUR :
13-B, Krishna Vihar, Navneet Society,
Narendra Nagar, Nagpur - MS
SAMBALPUR :
Cold Storage Complex, Baraipali, NH-06, Sambalpur-Orissa
Contact : 09860006810, 09890006810, 09021520880
Email : prachi@holidaymakers.net.in

SUN GLOW CONSTRUCTION PRIVATE LIMITED

9,ASUTOSH MUKHERJEE LANE
SALKIA HOWRAH-711106

Date : 01/10/2011

To
Prem Kumar Bhotika
Chartered Accountants
65 Matrumal Lohia Lane
Salkia, Howrah - 711106

Sub. : Appointment as Auditor for the Financial Year 2011-12

Dear Sir,

Please refer to above mention subject, we glad to inform you that we had appointed you as Auditor of our Company for the Financial Year 2011-2012. The appointment was confirmed in annual General Meeting held on 30/09/2011 by the members of the Company. Remuneration as per last year will be paid to you for the year.

Kindly send us your acceptance by returning the duplicate copy of this letter duly signed and file require form in ROC

Thanking you,

Yours Faithfully
For Sun Glow Construction Pvt Ltd

Kumar Om Prakash.

(Director)

वर्ष २०११ का डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, कोलकाता को

कोलकाता २४ मार्च। महानगर की सुप्रसिद्ध साहित्यिक-सामाजिक संस्था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रवर्तित विक्रमाब्द २०६८ 'सन् २०११' का २२वां 'हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' प्रख्यात साहित्यकार डॉ. कृष्ण विहारी मिश्र को आगामी रविवार ८ मई २०११ को स्थानीय महाजाति सदन प्रेक्षागृह में पूर्व केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी, सांसद द्वारा प्रदान किया जायगा। सम्मान स्वरूप ५१ हजार रुपये की राशि एवं मान-पत्र भेंट किया जायगा।

ललित निबंधकर के रूप में प्रतिष्ठित एवं हिंदी पत्रकारिता के गहन अध्येता के रूप में समादृत डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र ने अपनी साहित्य-साधना के बल पर सारे देश में अपार कीर्ति अर्जित की हैं। हिंदी पत्रकारिता पर केंद्रित उनकी पांच पुस्तकें अपने विषय का सम्यक् विवेचन-विश्लेषण करती हैं। उनके प्रकाशित ललित निबंध संग्रहों की संख्या ५ है, उन्होंने विचार प्रधान निबंध भी लिखे हैं जो पांच कृतियों में समाहित-प्रकाशित हैं। ये निबंध उन्हें आस्थावादी प्रखर चिंतक की महिमा प्रदान करते हैं। संस्मरणपरक कृति पर केंद्रित 'नेह के नाते अनेक' तथा संपादन एवं अनुवाद के क्षेत्र में किया गया उनका कार्य डॉ. मिश्र की सारस्वत-साधना एवं निष्ठा का प्रमाण है।

'परमहंस रामकृष्ण देव के लीला प्रसंग' पर केंद्रित पुस्तक 'कल्पतरु की उत्सव लीला' के रोचक कथ्य तथा अभिनव शिल्प ने इस जीवनीपरक कृति को प्रभावोद्पादक बनाया है। इस कृति को अपार लोकप्रियता प्राप्त हुई है। मिश्रजी के समस्त लेखन में भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय मनीषा के प्रति अपार श्रद्धा-भाव है। वे ऐसी आधुनिक भारतीयता के पोषक हैं जो परंपरा के जीवनदायी तत्वों से जुड़कर गतिशील एवं समृद्ध होती है। भारतीय सनातन प्रज्ञा तथा स्वस्थ परंपरा के प्रबल पक्षधर मिश्रजी पश्चिम की भोग-लोभपरक दृष्टि के घोर विरोधी हैं। उनके लेखन में आस्था का उजास एवं जिजीविषा की ज्योति है। माटी की महक तथा राष्ट्रीय चेतना की चहक से युक्त उनका चिंतन यूरोपीय आधुनिकता नहीं बल्कि भारतीय आधुनिकता से परिपूर्ण है।

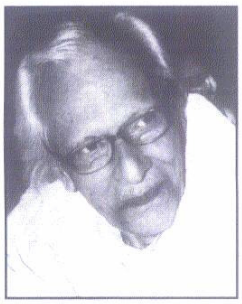

१ जुलाई १९३६ को बलिहार बलिया उ.प्र. में जनमे मिश्रजी की आरंभिक शिक्षा गांव की पाठशाला एवं गोरखपुर के मिशन स्कूल में हुई। उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम. ए. तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे स्वनामधन्य आचार्यों की कक्षा के विद्यार्थी होने का सौभाग्य डॉ. मिश्र को प्राप्त है। उन्हें प्रख्यात समालोचक आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी एवं आचार्य चंद्रबली पांडेय का अंतरंग सान्निध्य प्राप्त हुआ है। कोलकाता के बंगवासी मॉर्निंग कॉलेज में हिंदी विभाग के प्राध्यापक के रूप में उन्होंने ३० जून १९९६ को अवकाश ग्रहण किया।

उनके साहित्यिक अवदान की महत्ता को स्वीकृति प्रदान करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय ने 'डी लिट्' की मानद उपाधि, उ. प्र. हिंदी संस्थान ने 'साहित्यभूषण पुरस्कार' तथा भारतीय ज्ञानपीठ ने 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' प्रदान किया है।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ऐसे सारस्वत व्यक्तित्व को वर्ष २०११ का डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान प्रदान कर गौरव का अनुभव कर रहा है। वर्ष १९८९ में प्रवर्तित डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान का पहला पुरस्कार मूर्द्धन्य मनीषी एवं चिंतक डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर को तथा गत वर्ष २०१० का सम्मान मॉरिशस रामकथा मर्मज्ञ श्री राजेन्द्र अरुण को प्रदान किया गया था।

मानवीय समाज की त्रासदी

– नीलम ज्योति

आदमी की महत्वाकांक्षाओं ने उसे जितना आगे बढ़ाया है, उतने ही अनुपात में खुशियां छीनी हैं। अधिकतर लोगों को लगता है कि वे कभी सम्पन्न और अमीर नहीं हो पायेंगे क्योंकि जीवन की विषमताएं एवं मजबूरियां उसे आगे बढ़ने से रोक देती हैं। कई दफा जीवन में आए उतार-चढ़ाव के कारणों का विश्लेषण करने के उपरांत ऐसा प्रतीत होता है कि संभवतः संपूर्ण प्रकृति का नाम ही संघर्ष है। मानव जीवन की नैया चलाने के साथ-साथ अगर कुछ प्राप्त होता है तो वह है अनुभव...।

समाज में कई तरह के लोगों से संपर्क होता है जैसे कि डॉक्टर, वकील, इंजीनियर व अन्य व्यवसायिक वर्ग परंतु संपन्नता उन्हें संतुष्टि एवं सुख नहीं दे पायी। शायद जनकवि तुलसी दास ने ठीक लिखा है कि – 'नहीं दरिद्र सम दुख जग माही'। तो फिर आखिर सुख कहां है? क्या सुख संपन्नता में है, लेकिन ऐसा नहीं है। उन्होंने कहा कि 'संत मिलन अस सुख जग नाहीं' अर्थात संसार में दरिद्रता से बढ़ कर कोई दुख नहीं है और जो सुख, संतों, सज्जनों, अच्छे व्यक्तित्व वाले लोगों के मिलने से प्राप्त होता है उस जैसा आनन्द संपन्नता में नहीं आता। संपन्नता उन्हें असीम आनन्द एवं सुख नहीं प्रदान करती बल्कि उन्हें आत्मग्लानि की ओर ढकेल देती है। अंततः हमें भौतिकता एवं आध्यात्मिकता में समन्वय करना ही पड़ेगा।

सम्भ्रांत व्यक्तियों के वैवाहिक समारोह में जिस प्रकार धन का औचित्यहीन अपव्यय होता है, उसमें कितने गरीबों के चूल्हे जलते तो धन की सामाजिक सार्थकता निश्चित होती।

वर्तमान परिस्थितियों में जी लेना बहुत ही मुश्किल जान पड़ता है। सारी व्यवस्था उपभोक्तावाद से ग्रसित है। जिधर देखो, उधर व्याप्त भ्रष्टाचार मुंह बाए खड़ा है। राजनेताओं की नैतिकता में आयी गिरावट से भ्रष्टाचार को और बढ़ावा मिल रहा है। आज कानून उन तक पहुंच नहीं पा रहा है जो कानून तोड़ते हैं। सारे सबूतों को पैसे के बल पर मिटा दिया जाता है।

हिंदुस्तान के नीति निर्धारक लोग हिंदुस्तान को दो रूपों में देखते हैं – एक तरफ सुविधा संपन्न और सारे अवसरों को प्राप्त करने वाले लोग तो दूसरी ओर गरीबी और बेकारी की मार झेल रहे निर्धन लोग जो अपने जीवन की जवानी को जान ही नहीं पाते और सीधे बुढ़ापे में प्रवेश कर जाते हैं। चूंकि जीवन गाड़ी खींचते दो वक्त का निवाला जुटाते-जुटाते या तो किसी गंभीर बीमारी का शिकार हो जाते हैं या असमय काल के गाल में समा जाते हैं।

आज से पचास-साठ वर्ष पहले हमारे स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों ने सपना देखा था कि एक लोकतांत्रिक देश में अगर भ्रष्टाचार को रोका नहीं गया तो यह गांवों तक पहुंच जाएगा। आज सर्वविदित है कि हमारे गांवों का क्या हाल है? बिना सुविधा शुल्क के एक कदम भी कोई काम आगे नहीं बढ़ता। सारी सरकारी योजनाओं का जिला स्तर पर दम तोड़ना सब को मालूम है।

इसी कड़ी में हमारे युवा एवं जुझारू नेता माननीय राहुल गांधी जी ने कहा था – मेरे पिता जी तो कहा करते थे कि एक रूपये में पंद्रह पैसे ही गांवों के विकास में पहुंच पाते हैं लेकिन आज की स्थिति और भी बदतर हम देख रहे हैं। यहां तो महज पांच पैसा भी पहुंचना मुश्किल है।

प्रजातांत्रिक देश में शासन-प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार से सुप्रीम कोर्ट भी निराश है जैसा कि माननीय न्यायमूर्ति की टिप्पणी से झलक रहा है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार कभी खत्म नहीं हो सकता, यह भ्रष्टाचार कभी ठीक नहीं हो सकता।

यह टिप्पणी हरियाणा में जूनियर बेसिक टीचर भर्ती घोटाला मामले में सुनवाई के दौरान की।

माननीय ने आगे कहा कि हिंदुस्तान में सब लोग भ्रष्ट हैं। विद्वान अधिवक्ता ने कहा कि माई लार्ड भ्रष्टाचार के मामले में फैसला दे चुके हैं। अब यह मामला आपके सामने है आदेश दें, तो माननीय न्यायमूर्ति ने फिर कहा कि 'मेरा पहले वहम था कि मैं भ्रष्ट लोगों को ठीक कर सकता हूं और अब मैं समझ गया कि भ्रष्ट लोगों को ठीक करने का कोई चारा नहीं है।'

आज सत्ता और आम जन दक्षिणी और उत्तरी ध्रुव हो गये हैं परंतु आम आदमी आशावान होता है क्योंकि भारत की संस्कृति में निराशा के लिए जगह नहीं है। आम आदमी आशा भरी निगाहों से अपनी राजधानी की ओर टुकटुकी लगाए देख रहा है कि शायद किन्हीं योजनाओं का लाभ मिल जाए लेकिन आशा भरी दृष्टि में आंसू के अलावा कुछ भी नहीं मिल पाता।

किस भावी समाज का सृजन कर रही है हमारी वर्तमान पीढ़ी!

ज्योति अकादमी नामक मंच के तहत हम सियासत व समाज की कुव्यवस्था के शिकार बने उन बच्चों को बचपन + शिक्षार्जन का अनुभव देने में लगे हैं जिन्हें अपना या अपनों का पेट पालने के लिए कूड़ा-कचरा टटोलना पड़ता है, बंधुवा मजदूर-भिखारी बनना पड़ता है और अपना जिस्म तक बेचना पड़ता है। इस समय ३१ बच्चे हैं अपने जिम्मे। बिना किसी शासकीय अनुदान एवं समर्थ समाज के दान; सिर्फ चंद अपनों की रोटी में से हिस्सा लेकर जमीनी जनसेवा की यह जोखिम भरी जंग जारी है।

फरवरी २०१० में विवेक नामक एक सज्जन (एम.ए.एम.जे. पीएच.डी) अपने परिवार (पत्नी व १२, ८ वर्षीय दो बच्चे) सहित मेरे यहां पधारे। मंदी की आंधी से उपजी छंटनी सक्रिया की गिरफ्त में आकर वे अपनी नौकरी (बड़े अखबार 'आज' में सह प्रबंधक पद) से हाथ धो बैठे। बाराणसी से ५ माह तक ये जहां-तहां भागदौड़ करते रहे, आजीविका का कोई विकल्प न मिला। इस दौरान जमा पूंजी तो खत्म हुई ही घर के जरूरी सामान तक बिक गए। किराया न पाने पर मकान मालिक ने बेघर कर दिया। फीस न जमा होने से स्कूल से बच्चे पहले ही निकाले जा चुके थे। सपरिवार आत्मदाह करने के प्रयास के दौरान स्थानीय जनों द्वारा इन्हें बचा लिया गया। मेरे एक संबंधी ने इन्हें मेरे यहां भेज दिया। भयंकर महंगाई के इस दौर में मैं अपनी वर्तमान व्यवस्था बहाल रखने में ही बेहाल हूँ, ऊपर से यह आपद्धर्म...। सॉरी बोलीकर शरणागत को दुत्कार न सकी और ....। अतिरिक्त आवासीय व्यवस्था बची न होने के कारण इन्हें घर में रखी हूँ। इनके बच्चे ज्योति अकादमी में 'अलग लेवल के कारण' एडजस्ट नहीं हुए तो उन्हें दूसरे स्कूलों से जोड़ना पड़ा। कई जगह इन्हें काम दिलाने को सम्पर्क किया मगर...। ममता, करूणा, जरूरतमंद के काम आना, अतिथि देवो भव जैसी बातें लेखन-भाषण-प्रवचन में बढ़-चढ़ कर करने वाले भी इंकार कर दिये। निजी जीवन में व्यक्ति अपने ही द्वारा प्रदर्शित-व्यक्त आदर्शों-सिद्धांतों के उल्टा : इसका अनुभव एक बार फिर हुआ। कैसा होगा कल का समाज? भविष्य के लिए किस समाज का निर्माण करने में लगी है हमारी वर्तमान पीढ़ी? कौन-कैसे-कब ढूंढेगा इन मूलभूत सवालों का जवाब!

"अपने में भर सब कुछ कैसे व्यक्ति विकास करेगा। यह एकांत महाभीषण है अपना ही नाश करेगा।"

एक परिवार को बचाने के इस प्रयास में मेरी जनसेवी गतिविधियों के डांवाडोल होने की बात तो छोड़िये, मेरा पारिवारिक बजट तक बिगड़ने लगा है। हमारे पाठक यह जानकर हैरान होंगे कि मेरी गैर जानकारी, गैर मौजूदगी में ये सज्जन दिहाड़ी - मजदूरी तक के लिए निकल चुके हैं। क्या, कैसे किया जाए; पाठकगण मार्गदर्शन करें और असंभव-अनुचित न प्रतीत हो तो सहयोग बी..।

नीलम ज्योति, प्रभारी - ज्योति अकादमी,
१५४, पत्ता मौ., बागपत गेट, मेरठ सिटी -२५०००२

श्री मामराज अग्रवाल ने पाया 'पद्मश्री' सम्मान

नई दिल्ली। राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटील ने राष्ट्रपति भवन के अशोक हॉल में एक विशेष अलंकरण समारोह में इस वर्ष के पद्म पुरस्कार विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित विभूतियों को प्रदान किए। देश का द्वितीय सर्वोच्च पुरस्कार पद्मविभूषण पाने वालों में पूर्व राज्यपाल डॉ. ए. आर. किदवई, शिक्षाविद् प्रो. कुरूप, राजनयिक श्री ब्रजेश मिश्रा व शोधकर्ता डॉ. कपिलावात्सायन थे वहीं पद्मभूषण मिला लेखक श्री शंख घोष, उद्योगपति वाई.सी. देवेश्वर, अभिनेत्री वहीदा रहमान, गीतकार खैय्याम आदि को तथा पद्मश्री पाने वालों में समाज सेवा हेतु विशिष्ट समाज सेवी व उद्योगपति श्री मामराज अग्रवाल, नेत्र चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. मणि भौमिक, संगीतकार श्री अजय चक्रवर्ती, क्रिकेट खिलाड़ी वी.वी.एस. लक्ष्मण, अभिनेत्री तबु आदि। इस भव्य समारोह में उल्लेखनीय उपस्थिति थी उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी, प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह, सप्रंग अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी, गृहमन्त्री श्री पी. चिदम्बरम एवं अन्यान्य केन्द्रीय मन्त्रीगण की।

'भगवान से शैतान' बनते डॉक्टर

– डॉ. विकास मानव

जन्म के बाद और कफन से पूर्व औषधि हमारी आवश्यकता बन गई है। हमारे स्वास्थ्य का सारा दारोमदार डॉक्टर पर होता है। समाज ने डॉक्टर को सभ्य, बुद्धिजीवी, महान् इंसान ही नहीं, भगवान के रूप में स्वीकारा है। चिकित्सक से बढ़कर सेवा अथवा परहित साधना का कार्य किसी भी दूसरे ओहदे से नहीं हो सकता पर यही डॉक्टर आज कहां खड़ा है?

पैसे की चकाचौंध में पागल 'वेस्टर्न' का पक्षधर बना यह डॉक्टर आज इंसान भी नहीं रहा, शैतान हो गया है। गरीबों अथवा आम अवाम की दशा तो कसाई के सामने बकरे सरीखी है। मरीज नजर आया नहीं कि उसकी खाल तक खींच लेने के सारे सरंजाम। छोटी-मोटी बीमारी में भी तमाम तरह की जांच, टेस्ट, एक्स रे आदि। दुनिया भर की महंगी से महंगी दवाएं। हर ओर कमीशनखोरी, व्यवसाय। बावजूद इसके आम आदमी के मामले में फायदा संदिग्ध। रोगी ठीक होगा, इसकी कोई गारंटी नहीं।

पैसे की चकाचौंध में पागल 'वेस्टर्न' का पक्षधर बना यह डॉक्टर आज इंसान भी नहीं रहा, शैतान हो गया है। गरीबों अथवा आम अवाम की दशा तो कसाई के सामने बकरे सरीखी है। मरीज नजर आया नहीं कि उसकी खाल तक खींच लेने के सारे सरंजाम। छोटी-मोटी बीमारी में भी तमाम तरह की जांच, टेस्ट, एक्स रे आदि। दुनिया भर की महंगी से महंगी दवाएं। हर ओर कमीशनखोरी, व्यवसाय। बावजूद इसके आम आदमी के मामले में फायदा संदिग्ध। रोगी ठीक होगा, इसकी कोई गारंटी नहीं।

अब डिलीवरी को ही लें। 'सीजर' चिकित्सकों का फैशन है। मुश्किल से एक फीसदी डिलीवरी बिना ऑपरेशन के होती होगी। १० से २० हजार रुपये के लोभ में हर नारी का पेट चीरा जा रहा है। चिकित्सकों हेतु भारत सरकार द्वारा निर्धारित की गई आचार संहिता चिकित्सकों की हवस व हराम की कमाई के आगे किताबी गीत भर भी नहीं।

मेडिकल स्टोर्स पर भरी पड़ी ७० फीसदी दवाएं अनावश्यक अथवा नकली या प्रतिबंधित हैं। ये दवाईयां ही प्रयोग कराई जा रही हैं क्योंकि ये डॉक्टरों का जेब भरने का अलावा उन्हें उनकी बीवियों को गिफ्ट देने तथा युगल को सिंगापुर-लंदन की सैर कराने में सहायक है। दवा कम्पनियां भी बहती गंगा में हाथ धोने में पीछे नहीं हैं। दवा विक्रेता आपको प्रिंट रेट से अधिक मूल्य में दवा देता है। बहाना टैक्स का होता है। हालांकि उस दवा को कई गुना मूल्य पर और ऊपर से तमाम स्कीमों के साथ वह कम्पनियों से प्राप्त करता है।

एक दवा कम्पनी 'निमूस्लाइड' की १० गोली का पत्ता, जिसका अधिकतम खुदरा मूल्य २००रुपये दर्ज है, कैमिस्ट को मात्र ५२ रुपये में दिया जा रहा है। इसी प्रकार 'फोलिक एसिड' और जिंक सिरप की बोतल, जिस पर मूल्य ४९ रुपये अंकित है, कैमिस्ट को मात्र १२ रुपये में दी जा रही है। प्रसिद्ध एंटीबायोटिक 'सिप्रोफ्लॉक्सिन', जिस पर मूल्य ६९० रुपये अंकित है, केमिस्ट उसे १७० रुपये में प्राप्त करता है और ५५० रुपये वाली 'एमॉक्सीसिलिन' दवा विक्रेता को २१० रुपये में मिलती है। इन्दौर की बालिका रचना गीत-संगीत का शो करके रुपये इकट्ठा करती है और उससे तमाम ऐसे मरीजों का खर्च उठाती है, जो असहाय हैं। डॉक्टर व उससे संबंधित विभाग उस लड़की से भी अपना चार्जमय मुनाफा वसूल रहे हैं। उसके प्रति भी इन शैतानों का जमीर नहीं जागता। मेरठ की समाज सेविका नीलम 'ज्योति' कूड़ा-कचरा बीनने, भीख मांगने व बंधुआ मजदूर बनने को विवश असहाय बच्चों को बचपन-शिक्षण दे रही हैं। ऐसे अनाथ बच्चों के इलाज के दौरान भी उनसे डॉक्टर पिघलें, ऐसा संभव नहीं होता।

रक्तदान से मिला रक्त भी किसी भी रोगी को दानस्वरूप नहीं मिलता। यह खुलेआम चिकित्सकों अथवा अस्पतालों द्वारा महंगी दरों पर बेचा आता है। नेत्रदान से प्राप्त नेत्र का प्रत्यारोपण सशुल्क ही होता है।

सवाल यह उठता है कि हम ऐसी परिस्थितियों में क्या करें? विसंगतियों के मद्देनजर होमियोपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ने यौन, मानस, केश, उदर विकारों एवं पुरानी पेचीदा बीमारियों की स्वस्थ, सहज व सस्ती चिकित्सा मुहैया कराने का निर्णय लिया है। निर्धनों-विद्यार्थियों की चिकित्सा फ्री है। किसी भी समय ९८९७५१३८३७ पर मुफ्त परामर्श लिया जा सकता है। मगर यह ऊंट के मुंह में जीरा भी नहीं; पुख्ता विकल्प की बात तो बहुत दूर है। दूसरे, 'होमियोपैथ' की अपनी सीमाएं हैं।

कुल मिलाकर यक्ष प्रश्न वहीं कायम है। आधुनिक चिकित्सकों की वापसी मुश्किल है। छोटे डॉक्टर जिन व्याधियों को पांच-दस रुपये में ठीक कर देते हैं, उन्हीं के बड़े डॉक्टरों के यहां सौ से हजार रुपये तक लग जाते हैं। शासकीय चिकित्सालय भी अपवाद नहीं वहां तो मरीज ठीक से देखा तक नहीं जाता। जितने मूल्य की पर्ची वगैरह बनती है, उतने की भी दवा वहां से नहीं मिलती। बाजार की मार कहो परन्तु छोटे डॉक्टरों का वजूद ही नेस्तनाबूत किया जा रहा है। एलोपैथ का मोह त्यागने से हमारी ७० फीसदी समस्याएं हल हो सकती हैं। सबसे बड़ी बात यह कि हम औषधियों के साइड इफैक्ट से बच सकते हैं।

आयुर्वेद या होमियो चिकित्सक विकल्प सिद्ध हो सकते हैं। एक-दो फीसदी को अपवाद मान लें तो इन पद्धतियों के चिकित्सक अब भी अपनी जमीन से जुड़े हैं। जीवित है इनकी मनुष्यता। विशेष स्थिति में ही एलोपैथ हमारी मजबूरी बन सकती है। ऐसी स्थिति हर किसी के जीवन में नहीं आती, आती है एक-दो बार ही। हां, आंयुर्वेद के मामले में भी किंचित सावधानी लाजिमी है। तमाम दवा कम्पनियां पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा के चक्कर में धुआंधार विज्ञापनबाजी, भारी-भरकम कमीशन व स्कीमें लांच करने में मशगूल हैं। इसकी भरपाई उत्पादन की गुणवत्ता घटाकर होती है। शास्त्रीय पद्धति से औषधियों का निर्माण संभव नहीं होता।

आयुर्वेद व होमियोपैथी से हमारी ८० फीसदी बीमारियां ठीक हो जाती हैं। बाकी २० फीसदी बीमारियां (दुर्घटना जनित हालातों को छोड़कर) भी नहीं रहें, आगर हम नियम-संयम से रहना सीख लें। प्रदूषित वातावरण, मिलावट व अन्यान्य वजहों से स्वाभाविक तौर पर होने वाली बीमारियों की औषधीय चिकित्सा होती है परन्तु गलत आहार-विहार, आचार-विचार के कारण उत्पन्न रोगों को पैदा होने से सदाचार के जरिये रोका जाना चाहिए। या ठगाए रोगी या ठगाए भोगी। आज हम रोगी-भोगी एक साथ हो रहे हैं। अगर हम इसी सूरत में रहेंगे तो लूटने-ठगने वालों को ही दोष देना बेकार होगा।

(लेखक वरिष्ठ होमियोपैथिक चिकित्सक हैं)

ममता का मन्दिर

पं. श्री मालीरामजी शास्त्री
द्वारा संकल्पित उपेक्षित बच्चों व वृद्धों हेतु
राजारहाटन्यू टाउन कोलकाता में

अनाथ, असहाय एवं उपेक्षित बालकों, वृद्धों के पालन-पोषण एवं मार्ग-दर्शन हेतु राजारहाट में विशाल भू-खण्ड पर 'ममता का मन्दिर' बन कर तैयार है। इस 'ममता का मन्दिर' में भेद-भाव रहित सभी धर्मों, वर्गों के बालकों का आत्म-बल विकसित कर, उन्हें समाज और देश के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण सुदृढ़ नागरिक बनाया जाएगा।

'भागवत जन-कल्याण ट्रष्ट' ने यह निर्णय लिया कि ऐसे बालकों के लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा एवं सुमार्ग-दर्शन हेतु एक 'ममता का मन्दिर' बनाया जाए ताकि ऐसे बालकों को, वात्सल्य और ममता के साथ पाल-पोष कर सच्चे, सबल नागरिक के रूप में तैयार कर, उनमें स्वयं के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य-भावना जाग्रत कर उन्हें आत्म-निर्भर बनाया जा सके।

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

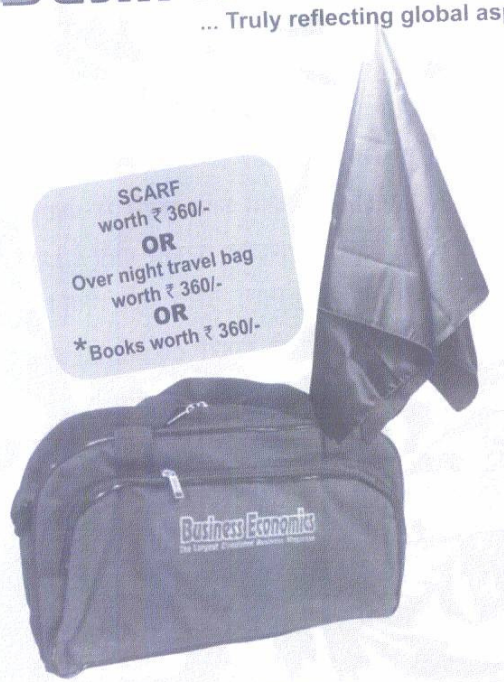

SCARF
worth ₹ 360/-
OR
Over night travel bag
worth ₹ 360/-
OR
*Books worth ₹ 360/-

TIE + Scarf
worth ₹ 1080/-
OR
Travel bag + Scarf
worth ₹ 1080/-
OR
*Books worth ₹ 1080/-

Business Economics

Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-

Gift Option
☐ Tie + Scarf **OR** ☐ Bag + Scarf ☐ Books
☐ Any One Book out of above (For International)
☐ Scarf **OR** ☐ Bag **OR** ☐ Books
☐ Any One Book out of above (For International)
☐ Exclusively for Students
☐ **EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS**

Name : Mr./Ms. ____________________

Address : ____________________ City/District : ____________________

____________________ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

State : ____________________ Country : ____________________

E-mail : ____________________ Mobile : ____________________ Landline : STD CODE ____________________

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ____________________ dated: __________ for Rs. __________ drawn on: ____________________

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

*** For books see reverse page**

Signature: ____________________ date: __________

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India

Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951

New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

व्यंग्य

आज का आदमी

– रामचरण यादव

आज का आदमी सचमुच कितना होशियार है कि वह आलसी और अपराधी तो बन सकता है पर अनुभवी नहीं बनना चाहता। जब से यह पता चला है कि आहार, निद्रा, भय और मैथुन की प्रक्रिया पूर्व से ही प्रत्येक के लिये निर्धारित और सभी में स्थापित है, तब से हर जीव-जन्तु, पशु-पक्षी एक दूसरे से डरने लगे है। बड़े से बड़ा जानवर भी भयभीत हो उठता है मगर आज का आदमी किसी से नहीं डरता। हर एक को डरने का अधिकार है, इसलिए डरना तो चाहिए ही। जो किसी से नहीं डरता वह इन्सान नहीं शैतान है, पर शैतान भी कभी-कभी भगवान से डरता है। यहाँ तक कि स्वयं भगवान भी डरते हैं। कहावत हैं "नंगे से खुदा भी डरता" भय के अधिकार का हनन करने वाले मानव के खिलाफ मानव अधिकार आयोग को रिपोर्ट देनी चाहिये। जब सभी प्राणी डरते हैं, तो तुम्हें डरने में भला लाज क्यों आती है। आदमी की शक्ल और अक्ल दोनों पर भरोसा करना बहुत बड़ी बेवकूफी है। अब आप ही देखिए ना सिर्फ दिखाने के लिए, औरों को समझाने के लिए या दिल बहलाने के लिए आज का आदमी थोड़ा बहुत बदनामी से डरने लगा है। वरना डरने का तो कोई कालम ही नहीं छोड़ा था। मुसीबत की मार तथा समय की रफ्तार ने व्यक्ति को हार मानने के लिए विवश कर ही दिया आखिर बदनामी से डरा तो सही। अब तो बहादुर से बहादुर इन्सान बदनामी से डरने लगा है। राजा-महाराजा, मंत्री-संत्री, नेता-अभिनेता सभी बदनामी से बचने लगे हैं। छोटे बच्चे तो पहले किस्सा कहानी से ही डर जाया करते थे, ठीक उसी तरह आज वीर योद्धा भी बदनामी से डर जाते हैं। बच्चे, बूढ़े, जवान सभी को इसकी पहचान हो गई है तभी तो बदनामी खुद परेशान हो गई है। कभी बेटी की बदनामी, कभी बीवी की बदनामी, कभी इसकी तो कभी उसकी, जिधर देखो उधर बदनामी ही बदनामी।

आज का आदमी भले ही कितनी मनमानी करे पर बदनामी उसका पीछा न छोड़ेगी। जो आज तक किसी से नही डरे वे भी डरते हैं, तो सिर्फ बदनामी से। जब हरामी से हरामी व्यक्ति भी बदनामी से डरने लगा तब आम आदमी की औकात ही क्या? ऋषि-मुनि, योगी, सन्यासी, लोभी, भोगी, कामी सभी ने बदनामी से बचने का प्रयास किया मगर बच न सके। बदनामी का कहर उन पर भी बरसा। बीच-बीच में तो बदनामी का इतना असर हुआ कि जहर का भी नहीं होता। बदनामी के कारण कई लोगों ने आत्महत्या कर ली, इसके डर से बस्ती क्या गांव, शहर यहां तक देश छोड़ परदेश चले गये। आदमी अक्सर आहार, निद्रा और मैथुन में ही मस्त रहता उसे आहार के नाम पर कुछ भी परोस दो भक्षण कर लेगा। निद्रा के लिए नींद की गोली व सल्फास का प्रयोग करता फिर ऐसी गहरी निद्रा में सोता कि दुबारा उठता ही नहीं। मैथुन की बात करना तो व्यर्थ है, क्योंकि उसके लिए तो वह पूर्ण स्वतंत्र है। नियम-कानून, मान-मर्यादा, बहन, बहू, बेटी आदि का कुछ भी ख्याल नहीं रहता। ऐसे मामलों में तो वह बदनामी से भी नहीं डरता। आज का आदमी झूठी बदनामी करके भी आसानी से बरी हो जाता। बड़े-बड़े तीज त्यौहार भी वर्ष में एक बार आते मगर बदनामी की बहार तो चाहे जब आती। बदनामी की बात ही निराली है, उस बेचारी को क्या पता कब होली और कब दीवाली है। वह तो हर वक्त खाली है। बुरा है कि भला है, झूठा है कि सच्चा है उसे कोई परवाह नहीं। वैसे भी नामी गिरामी व्यक्तियों की कुछ ज्यादा ही बदनामी होती है। बदनाम आदमी बाद में बदल भी जाये चाहो बेदाग हीरा कहलाए पर उसके प्रति लोगों की भावना नहीं बदल सकती। एक छोटी सी बदनामी भी दीवानी की हर गली में घूम-घूम कर उसकी कहानी कहती फिरेगी। सरकारी कोर्ट की तरह निर्धारित मूल्य से भी कम दाम में मिल जायेगी बदनामी। हर जाति हर वर्ग के लिए सुरक्षित व आरक्षित बदनामी से सभी मुक्ति चाहते हैं।

संसार में भव बंधन से मुक्ति के अनेकों उपाय हैं किन्तु बदनामी के भय से मुक्ति का कोई उपाय नहीं। बदनामी की बारात में शामिल होने वाला बादशाह भी भिखारी नजर आता है। बुद्धूराम तो बार-बार समझाता पर आज का आदमी बदनामी से बाज नहीं आता। जो बदनाम हैं वो भी दुखी और जो बदनामी करता वो भी दुखी। बदनामी ही दुनिया में एक मात्र ऐसी है जिससे कोई नहीं बच सकता। अच्छा तो यही होगा कि तुम भी बदनाम होकर कोई ऐसा काम कर जाओ कि खुद बदनामी तुम्हें प्रणाम करने लग जाये। रोको, आज का आदमी बड़ी मस्ती में है उसे पता नहीं कि बदनामी आज तो बस्ती में है, कल गांव में परसों शहर में और फिर धीरे-धीरे सम्पूर्ण जगत में व्याप्त हो जायेगी।

इसलिए वेटी के ब्याह की चिन्ता छोड़ पहले बदनामी की चिन्ता करो। बदनाम होने के बाद ब्याह नहीं हो सकता सिर्फ बदनामी होगी। जहरीली नागिन सी इस बदनामी को अगर बाजार में भी बेचना चाहोंगे तो खरीददार हजारों मिल जायेंगे। बदनामशुदा आदमी तो जानवर से भी ज्यादा बदतर हैं ऐसे आदमी से पंगा लेना मेरे वश की बात नहीं। जानवर तो आदमी से डरता है पर आज का आदमी तो बदनामी से भी नहीं डरता, बल्कि नित्य नये ऐसे काम करता जिससे और बदनामी हो। वो जानता है कि अच्छे काम करके भी जीवन भर प्रसिद्धि नहीं पा सकते जो मुफ्त में बदनामी से स्वतः प्राप्त हो जाती है। बेदर्द, बेवफा ये बदनामी न जाने कितने बेकसूर लोगों की जान ले लेती है। हजारों, लाखों लोगों को परेशान करती है। जहां तक बदनामी का सवाल है उससे तो बचकर रहना ही पड़ेगा। बेसिर पैर की बातें मुझे आती नहीं। इसलिये बेवाक, बेधड़क कहता हूं, कि बेफिक्र बादशाह बनकर मस्त रहो और अगले बसन्त के पूर्व ही बदनामी का अन्त करो। भय के बिना प्रीत नहीं होती, युद्ध लड़े बिना जीत नही होती। इसलिए डटकर मुकाबला करो तथा जहां तक हो सके सबका भला करो। बेबस और लाचार ये मानव बदनामी का बोझ ढोते हुए संसार से विदा ले लेता मगर उससे बचने का प्रयास नहीं करता। इंसान हो इंसान की तरह बदनामी से डरो। बरबस ही ऐसी बातें करना व्यर्थ है जबकि सबको पता है कि बदनामी तो सर्वत्र है।

बहुमुखी प्रतिभा का धनी आज का आदमी भी झूठी बदनामी से बदनाम है। जान है तो जहान है, यहाँ हर आदमी परेशान है। बुराईयों की चाबी आदमी के हाथ लग गई तभी तो बदनामी अन्त तक उनके साथ रही। इसकी कहानी तो बहुत पुरानी है। "सियाराम भय सब जग जानी" ठीक उसी तरह है ये बदनामी। वेद पुराण भी इसका बखान करते थक गये फिर भी मेरे जैसे आदमी इससे न बच सके। बदबू कि तरह फैलती है ये बदनामी। आज का आदमी मेरी तरह बेवकूफ नहीं जो बदनाम होकर भी कोई अच्छा काम कर सके।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रमोद सर्राफ को पितृ शोक

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रमोद सर्राफ के पिता समाजसेवी श्री लक्ष्मी नारायणजी सर्राफ का गत रविवार १ मई २०११ को गुवाहाटी स्थित उनके निवास स्थान पर हृदयाघात के कारण स्वर्गवास हो गया। आप ८० वर्ष के थे।

संवेदना पत्र

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन से प्राप्त सूचना के अनुरूप समाज के निम्न लिखित स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के निधन पर इस सम्मेलन की शिवसागर झाखा ने संवेदना प्रकट भी है। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को शान्ति एवं परिवार सदस्यों को अपूरणीय क्षति सहने की शक्ति प्रदान करें।

■

समाज के विशिष्ट समाजसेवी एवम् पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, शिवसागर-शाखा के अध्यक्ष श्री सत्यनारायणजी दाधीच की धर्मपत्नी, धर्मपरायणा एवम् सज्जन स्वभाव वाली **श्रीमती दुर्गा देवी दाधीच**, के दिनांक २४.०३.२०११।

■

श्री प्रभुदयाल जी अग्रवाल (बुधिया), सुपुत्र स्वर्गीय शिवदयाल जी अग्रवाला (बुधिया) को दिनांक ३०.०३.२०११।

■

हमारे समाज के विशिष्ट समाजसेवी एवम् पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, शिवसागर-शाखा के सदस्य, श्री शंकरलालजी हरलालका की धर्मपत्नी, धर्मपरायणा एवम् सज्जन स्वभाव वाली **श्रीमती शारदा देवी हरलालका**, को दिनांक २५.०३.२०११ वार शुक्रवार को हुऐ आकस्मिक देहावसान।

■

हमारे समाज के विशिष्ट समाजसेवी एवम् पूर्वोत्तर प्रादेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, शिवसागर-शाखा के सदस्य, श्री लक्ष्मीनारायण जी मुंदड़ा के दिनांक २७.०३.२०११ वार रविवार को हुऐ देहावसान।

■

हमारे समाज के युवा एवं होनहार कार्यकर्त्ता एवम् सज्जन स्वाभाव वाले **श्री मनोहरलाल जी लड्ढा** के दिनांक २८.०३.२०११ वार वृहस्पतिवार को राजस्थान के अकाषर नगर, जिलाः बिकानेर मे हुऐ आकस्मिक देहावसान।

शिव - स्तवन (त्रेटक छंद)

– ताऊ शेखावाटी

भज रै मन संभु उमा सहितं
हर' नाम सदाँ हर भाँत सुभं
किरपालु दयालु सदाँ विमलं
निज भक्त जणाँ हित कल्प समं।

भज नित्त सदाँ सिव ओढर नैं
अज आदि अनादि अगोचर नैं
अचलं अभयं वरदं द्रविणं
सब ताप'र व्याधि व्यथा समनं।

भगती सिव संकर माँय रम्याँ
सिव ही सिव है 'सिव' नाम भज्याँ
सुख सांति क्रिपा परमायतनं
करुणामय रूद्र पवित्र परं।

सिर जूट जटा ससि गंग वहे
गळ नाग कराळ भुजंग रहे
कर माँय त्रिसूल सजै डमरू
वृष - वाहन नाथ भवं सुमरूँ।

म्रिग छाल लपेट भभूत रमा
दिन-रात रमै सँग सैल-सुता
गिरिजा पति दीन दयाल विभुं
सब भक्तन रो रखवाळ प्रभुं।

सब देवन में तुम देव महा
मिल ध्यान धरै हरि लोक-पिता
सगळा नर-देव'र संत जती
सुमरै सिव संकर पारवती।

नित नेम स्युँ संकर नाम रटै
सबळा भव बंधन पाप कटै
सगळा मनवाँछित काम सरै
दुख दारुण रोग-वियोग हरै।

गीतल

– युगल किशोर चौधरी
चनपटिया, प. चम्पारन, बिहार

बदल गये मौसम के तेवर,
इन्साँ बदल गये हैं।
सावन-भादो इतने बरसे
सोचन बदल गये हैं।
घाव हुए अन्तर में इतने
क्रन्दन बदल गये हैं।
सगै मुरबौटे मानव-मुख पर,
चेहरे बदल गये हैं।
चमन वही है, फूल वही हैं
माली बदल गये हैं।
बदला नहीं समाज अभी तक,
शासक बदल गये हैं।
बदले नहीं गरीब अभी तक
नारे बदल गये हैं।
बदला नहीं साज है अब तक
सरगम बदल गये हैं।
बदले नहीं गाँव हैं अब तक
मुखिया बदल गये हैं।
बदले नहीं बाँसुरी के स्वर,
वादक बदल गये हैं।
बदल गया नदियों का पानी,
पनघट बदल गये हैं।
बदली नहीं झोंपड़ी अब तक
ठाठ महल के बदल गये हैं।

मारवाड़ी सम्मेलन, जोरहाट शाखा के कार्यक्रम

मारवाड़ी सम्मेलन, जोरहाट शाखा का चुनाव गत १४ नवम्वर २०१० को चुनाव अधिकारी श्री नेमीचन्दजी करनानी एवं श्री शरद बाजाज की देख रेख में सम्पन्न हुआ था। इस सभा में सर्वसम्मति से श्री बाबुलालजी गगड़ अध्यक्ष, श्री अनिल केजड़ीवाल सचिव तथा श्री रामकुमारजी शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये। नई कार्यकारिणी समिति ने दिनांक २७ फरवरी से अपना पदभार सम्भाला है।

नई समिति के पहले कार्यक्रम में महाशिवरात्री के उपलक्ष में दिनांक २ मार्च को थाना चाराली के पास जनमानस के कल्याण हेतु महाशिवाभिषेक किया गया जिसमें भारी संख्या में भक्तों के साथ यहां के विधायक श्री राणा गोस्वामी ने भी उत्साह पूर्वक भाग लिया।

दिनांक १९ मार्च को श्री मारवाड़ी ठाकुरवाड़ी द्वारा आयोजित होलिका दहन के कार्यक्रम में शिरकत किया गया।

दिनांक २० मार्च को फाग उत्सव एवं होली मिलन समारोह अति उत्साह और उमंग के साथ श्री मारवाड़ी ठाकुरवाड़ी प्रांगण में मनाया गया। सभी समाज बन्धुओं का एक साथ समागम करने एवं आपसी प्रेम तथा परिचय बढ़ाने के उद्देश्य से किये गये इस उत्सव में भारी संख्या में लोग शामिल हुए। इस कार्यक्रम में हमारे समाज की सभी संस्थाओं द्वारा सहभागीता निभाई जाती है। सुबह १० बजे से आयोजित फाग उत्सव के दौरान बुजुर्ग, जवान तथा बच्चे सभी ने एक दूसरे को गले लगाकर सुगंधित गुलाल से सराबोर किया तथा स्थानीय कलाकारों द्वारा चंग की थाप पर पूरा माहौल

उत्साह से भरपूर रहा। इस कार्यक्रम में हमारे जोरहाट के विधायक श्री राणा गोस्वामी भी उपस्थित हुए तथा चंग की थाप पर नाच गाकर खुशी मनाई। शाम को ५ वजे से आयोजित मिलन समारोह के दौरान भी सभी ने एक दूसरे को मिलकर बधाईया दी तथा छोटों को आशीर्वाद दिया। सुबह के कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी तीन चंग पार्टी को एक-एक चंग पुरस्कार स्वरूप दिया गया।

मारवाड़ी होली उत्सव

मारवाड़ी परम्परा अनुसार ऐतिहासिक होली संस्कारधानी में आयोजितः-

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा होली पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ अध्यक्ष गणेश नारायण पुरोहित, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पुरुषोत्तम संघी, उपाध्यक्ष श्रीमती मंजू खंडेलवाल द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। कुमारी आयुषि खंडेलवाल द्वारा गणेश वन्दना की प्रस्तुति से प्रथम पूज्य श्री गणेश भगवान का आशीर्वाद सम्मेलन को मिले ऐसी प्रार्थना की। सत्र २०११-१३ के पदाधिकारियों को मुख्य अतिथि भूतपूर्व महापौर श्री विश्वनाथ दुबे की उपस्थिति में राधेश्याम अग्रवाल द्वारा पद ग्रहण एवं शपथ कराई। संचालन विजय सखलेचा ने किया।

द्वितीय चरण में सम्मेलन के सभी सदस्य परिवार के साथ राजस्थानी पोषाक पहने भक्त प्रहलाद की पूजा हेतु पूजा स्थल पर पहुँचे, पंडित जी द्वारा सम्मेलन के अध्यक्ष गणेश नारायण पुरोहित से मंत्रोच्चार और विधि-विधान से पूजन सम्पन्न कराया तत्पश्चात उपस्थित सभी सदस्यों ने परिवार के साथ बड़कुले की माला लेकर पूजा की। फेरी लगाकर भक्त प्रहलाद के जयकारे लगाये गये। अलिन भाव सिंगा, संतोष पोद्दार, बृजकिशोर शर्मा, श्याम खंडेलवाल, ओम प्रकाश अग्रवाल, धोती-कुर्ता और पगड़ी में राजस्थानी दूल्हे लग रहे थे। श्रीमती सावित्री खंडेलवाल, श्रीमती शक्ति खंडेलवाल, श्रीमती पुष्पा खंडेलवाल, श्रीमती मंजू सखलेचा, श्रीमती सुनीता अग्रवाल, श्रीमती पूनम भावसिंगे, श्रीमती अनीता जेठा आदि लाल चुनरी की साड़ी में दुल्हन सी दिख रही थीं। बच्चे भी सज-धज कर आये हुये थे। पूरा माहौल मारवाड़ी बारात सा लग रहा था। बृजकिशोर शर्मा द्वारा मारवाड़ी बोलकर कार्यक्रम में सहयोग प्रदान किया।

तृतीय चरण में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुति में "होली मा उड़े रे गुलाल" पर कुमारी मोना शर्मा, कुमारी राखी शर्मा, मास्टर ऋषि शर्मा, मास्टर कृष्णा शर्मा द्वारा मनमोहक सामूहिक नृत्य पुरस्तुत किया गया। "रंग बरसे" होली गीत पर कुमारी रुचि खंडेलवाल, कुमारी आयुषि खंडेलवाल द्वारा नृत्य कर गुलाल से माहौल को संगीन बना दिया। आमंत्रित कवि राकेश राकेन्दु, जनार्दन शर्मा द्वारा हास्य व्यंग की कविताओं से लोगों को खूब हंसाया, सम्मेलन के कवि बृजकिशोर शर्मा द्वारा मारवाड़ी भाषा में कविता पाठ कर सभी का मनोरंजन किया। श्री घनश्यामदास अग्रवाल ने अपने अंदाज में कविता सुनाई। संचालन मुरली अग्रवाल ने किया। महामंत्री कमलेश नाहटा द्वारा प्रदत्त सम्मेलन की दूरभाष निर्देशिका का विमोचन अध्यक्ष के कर-कमलों द्वारा किया गया। सभी के मनोरंजन के लिये तम्बोला खिलाने में श्रीमती सीमा राठी, श्रीमती सावित्री खंडेलवाल, श्रीमती निर्मला महेश्वरी ने सहयोग किया। कुमारी निधी खंडेलवाल और कुमारी आकृति खंडेलवाल द्वारा बनाये गये कार्टून की सभी ने सराहना की। भोजन व्यवस्था में विशेष सहयोग प्रभात अग्रवाल, यतीष अग्रवाल, अनिल शर्मा, रमेश खंडेलवाल, द्वारा दिया गया। श्री कैलाशचन्द्र अग्रवाल (बब्बाजी), आर. जी. अग्रवाल, के. के. अग्रवाल, तोलाराम जी धूत, पुरुषोत्तम पोद्दार, चमन अग्रवाल आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। आभार प्रदर्शन प्रांतीय महामंत्री कमलेश नाहटा द्वारा किया गया।

कहानी

आतंक

-डॉ. सरला अग्रवाल

कई दिनों से लगातार बर्फ गिर रही थी। बर्फ गिरने के समय अधिक ठण्ड नहीं होती... बर्फ गिरने का दृश्य भी अत्यंत मनोरम होता है।

पहाड़ पर बने छोटे-छोटे काठ लकड़ी के मकान, चारों ओर चिनार और अखरोट के पेड़, बीच-बीच में चमकते सुन्दर रंगबिरंगे जंगली पुष्प अत्यंत सुहावने प्रतीत होते हैं।

सनोवर का परिवार भी जम्मू में एक ऐसी ही छोटी-सी पहाड़ी पर टिका था। पास ही एक झरना ऊपर वाली पहाड़ी से फूट निकला था, जो उनके घर के सामने दिखाई देता था। सनोवर घण्टों घर के बाहर बैठी पल-पल बदलते प्रकृति के मनोहर दृश्यों के सौन्दर्य को एकटक निहारा करती थी।

पूरे कश्मीर में फैले आतंक और आतंकवादियों से लोग भयभीत थे। जम्मूघाटी तक आतंक का साया अपना प्रभुत्व दिखाने लगा था।

कानों में बड़े-बड़े गोल बाले पहने, अपनी गुलाबी कामदार ढीली-ढाली बाहों वाले कुर्ते और ढीली सलवार में सनोवर बड़ी प्यारी लगती थी...मानों किसी चित्रकार के चित्र की नायिका हो....घर का पूरा काम निबटा लेने के बाद भी उसके पास दोपहर का समय खाली रहता था....तब उसका संगी-साथी सृष्टि के नियन्ता द्वारा छिटकाया ये आस-पास का सौन्दर्य ही तो होता था।

कानों में बड़े-बड़े गोल बाले पहने, अपनी गुलाबी कामदार ढीली-ढाली बाहों वाले कुर्ते और ढीली सलवार में सनोवर बड़ी प्यारी लगती थी...मानों किसी चित्रकार के चित्र की नायिका हो....घर का पूरा काम निबटा लेने के बाद भी उसके पास दोपहर का समय खाली रहता था....तब उसका संगी-साथी सृष्टि के नियन्ता द्वारा छिटकाया ये आस-पास का सौन्दर्य ही तो होता था। उसकी दो बड़ी बहनों की शादी हो चुकी थी और भाई रुपया कमाने हिन्दुस्तान की राजधानी गया हुआ था। वृद्ध माता-पिता अक्सर सिगड़ी में कोयले डलवाकर बिस्तर पर रजाई में उसे रखकर बैठे रहते थे। सोनमर्ग से आती लबालब भरी नदी पास ही बहते हुए निकलती थी...उसके कारण सर्दी और भी गहरा जाती थी....बर्फ पड़ने के बाद तो नदी के बर्फ-से पानी में हाथ भी नहीं दिया जा सकता था।

संध्या हो चली थी...सनोवर ने रात का खाना तैयार कर लिया था और कहवे का सामान एक जगह रख लिया था..जरा सी देर में ही घुप अंधेरा छा जायेगा तब कुछ भी कर पाना दुस्तर हो जायेगा।

सनोवर ने लैंप की चिमनी साफ करके उसमें कैरोसीन ऑयल डाल दिया था...दीवार पर लगी एक छोटी ढिबरी में भी नई बत्ती डालकर उसे जला लिया था...कई दिनों के बाद लैंप और ढिबरी को उसने अपने दक्ष हाथों से चमकाया था, इस कारण दोनों का प्रकाश बहुत उजाला लगने लगा था। भइया पिछली बार जब शहर से घर गया था तो उसके लिए बैटरी से चलने वाला छोटा सा ट्रांजिस्टर से आया था। उससे वह नित्य विविध भारती का कार्यक्रम और गीत सुना करती थी...कितनी खुश हो उठी थी वह उसे पाकर! उसके एकाकी जीवन को मानों एक सुरीला साथी मिल गया हो...भइया को उसने अपनी गलबहैयां डालकर चूम लिया था।

बर्फ गिरनी बन्द हो चुकी थी, रात का अन्धकार गहराने लगा था...।

सनोवर ने जमीन पर दस्तरखाँ बिछाकर खाना लगा दिया था पर अम्मी और अब्बू दोनों ही बिस्तर से नहीं निकले...वह उनकी ओर देखकर ताली बजा कर हंस पड़ी।

'बिटिया आज तो तू हमें यहीं पर खाना दे दे...सिगड़ी गर्मा रही है.....बाहर पैर धरने की हिम्मत नहीं है।'

'मुझे मालूम था आप दोनों यही कहोगे।' सनोवर ने गुस्ताख नजरों से उनकी ओर देखा।

'तू भी अपना खाना लेकर मेरी रजाई में आ जा।' अम्मी ने बड़े दुलार और आग्रह से कहा था।

सनोवर ने ऐसा ही किया.... अपनी तामचीनी की प्लेट में कुछ गोश्त के टुकड़े और रोटी डालकर वह अम्मी की रजाई में जा घुसी।

तीनों ने बड़े प्यार से खाना खाया।

'अरी गुड़िया, अब तो तू ही हमें जिन्दा रखे है।' अम्मी ने कहा...वरना यहां हमें देखने वाला कौन है ? हमारे नाते रिश्तेदारों का इतना बड़ा कबीला था, सब आतंकवादियों के हत्थे चढ़ गया। अपने मुस्लिम भाई-बहनों के साथ उनकी क्या दुश्मनी है भला, जो सबके घरों पर हमला करके सभी को कश्मीर से भगा दिया।

पहले तो कश्मीरी पण्डितों पर ही यह गाज गिरी थी...अब तो ये हिन्दू देखते हैं न मुसलमान....बहन देखते हैं न बेटी...हर किसी को अपनी हवस का शिकार बनाते हैं। बेटी, तू सारे दिन घर के बाहर बैठी रहती है, अगर तुझ पर उनकी नजर पड़ गई तो हम सभी दोजख में गिरेंगे...तू घर के अन्दर रहा कर।'

'वो अब्दुल कितने चक्कर मार रहा है बेटी, तू उसके साथ निकाह क्यों नहीं पढ़वा लेती लड़का अच्छा है, कमाता भी ठीक-ठाक है, तुझे चाहता भी है...हमारा फर्ज भी पूरा हो जायेगा। न जाने कब हमारी आंखें मूंद जायें, क्यों ?' अब्बू ने उससे पूछा था।

'अब्बू तुम्हें तो अपना फर्ज पूरा करने की पड़ी है...मैं लाख बार कह चुकी हूं कि मेरा मन उसके साथ नहीं मिलता। और अभी तो पहले भाईजान का निकाह होगा....मैं तो उनसे बहुत छोटी हूं उम्र में।'

'अरे लड़की की उम्र नहीं देखी जाती....उसकी जितनी जल्दी शादी कर दो, उतना ही सुकून मिलता है मां-बाप को। जरा से में उसका पैर इधर-उधर किसी के साथ फिसल जाये तो पूरा खानदान

बदनाम होता है।'

'अच्छा अब बस करो....खाने के दो टुकड़े निगलने भी हराम कर दिये आप लोगों ने....इतने चाव से आज गोश्त पकाया था मैंने। कल सुबह तो ईंधन के लिए लकड़ी बीन कर लानी होंगी पहाड़ के जंगलों से...जमीला और सकीना भी जायेंगी...तीनों मुंह अंधेर ही चल पड़ेंगी।'

'बड़ी आफत है, कोई काम करने वाली बन्दी भी तो नहीं है हमारे पास, सारा काम तुझे अकेले ही संभालना पड़ता है...मेरा भी बदन इतना दर्द करता है कि क्या बताऊँ तुझे। जरा-सी भी मदद नहीं कर सकती बिटिया...मुझे तो अपनी जवानी के वे दिन आते हैं जब हमारे पास हाउस बोट थी, वह भी दो कमरे वाली...क्या शानदार घर था बोट पर... जो सैलानी आता, उसे देखते ही उस पर रीझ जाता था। बिटिया... उसका नाम लिखा था, क्या? बताना सनोवर के अब्बू?'

अब्बू के झुर्रियों भरे चेहरे पर मीठी मुस्कान खिल पड़ी... 'लव हाउस' कह कर पुरानी यादों में खो गये। 'मैं उनके लिए चाय बनाकर देती थी बिटिया' अम्मी भी मुस्कराने लगीं, 'अल्लाह मियां ने बड़े अच्छे दिन दिखाये हैं बिटिया, खूब अच्छा खाया, खूब अच्छा पहना। आमलेट तो मैं इतना बढ़िया बनाती थी कि दूर-दूर तक मशहूर हो गया था। पर अब तुझे कोई सुख नहीं दे पाये।' अम्मी फिर दुखों के सागर में गोते लगाने लगीं।

उसने चूल्हे में एक लकड़ी और डाल दी...चूल्हे पर चढ़ी देगची की प्लेट उतार कर देखा, आग तेज की और देगची में दूध, चीनी और कहवा डाल दिया। तामचीनी के तीन मग लाकर बड़ी प्लेट में रख लिये....तब तक देगची में वह पूरी तरह उबल चुकी थी। उसने लकड़ी बाहर निकालकर बुझा दीं। देगची नीचे उतार कर, उससे तीनों मगों में कहवा उँड़ेल दिया। कहवे की सौंधी सुगन्ध पूरे कमरे में फैल गई।

'अम्मी, क्यों फालतू के लिए इतनी गमगीन हो रही हो? जिसके करम में जो अल्लाह मियाँ ने लिख दिया, उसे वह तो भुगतना ही पड़ता है। मैंने तो यही सोच लिया है। हर समय फजूल के लिए क्यों दुख मनाना। खुश रहा करो कि तुम्हारा बेटा बाहर कमाने गया है तो अल्लाह मियाँ के शुक्र से कुछ तो कमाकर लायेगा ही...और बेटी बड़ी होते-होते समझदार हो रही है। घर का काम-काज संभालने लगी है और तुम्हें क्या चाहिए? तुम्हारा बदन दुखता है तो खुद काम करने की मजबूरी तो नहीं है न?'

'देखो सनोवर के अब्बा! हमारी बेटी कितनी सयानी हो चली है... कैसी बड़ी-बड़ी बातें करती है?'

'सो तो है...इसे परवरदिगार ने उमर से पहले ही इतनी समझ यश दे दी है कि हमारा तो बेड़ा पार हो ही जाना है।'

सनोवर खाना खा चुकी थी...वह रजाई से बाहर निकल आई और सबकी प्लेटें समेटकर उसने एक ओर रख दीं। थोड़ा-सा गरम पानी एक लोटे में लाकर उसने चिलमची में दोनों के हाथ-मुँह धुलवा लिये और उस पानी को मोरी पर डाल दिया।

उसने चूल्हे में एक लकड़ी और डाल दी...चूल्हे पर चढ़ी देगची की प्लेट उतार कर देखा, आग तेज की और देगची में दूध, चीनी और कहवा डाल दिया। तामचीनी के तीन मग लाकर बड़ी प्लेट में रख लिये....तब तक देगची में वह पूरी तरह उबल चुकी थी। उसने लकड़ी बाहर निकालकर बुझा दीं। देगची नीचे उतार कर, उससे तीनों मगों में कहवा उँड़ेल दिया। कहवे की सौंधी सुगन्ध पूरे कमरे में फैल गई।

उसने कहवा पहले अब्बू को दिया फिर अम्मी को... 'संभल कर फूंक मार-मार कर पीना, खूब गर्म है खौलती हुई।'

दोनों ने मुँह से फूंक मार-मार कर पीना शुरू ही किया किया था कि इतने ही में सनोवर भी अपना मग्गा अपने हाथ में पकड़े उनके पास खटिया पर आ बैठी।

'जाने क्या समय हुआ होगा?' अम्मी ने पूछा।

'अरे तुम्हें समय से क्या लेना-देना है? फिर भी बेटा सनोवर वह घड़ी निकाल कर समय तो देख जो तेरा भइया तेरे लिए कलाई पर बांधने के लिए लाया था पिछली बार?'

'अभी तो कुल सात बजे हैं...आप लोगों को लग रहा है मानो पूरी रात बीत चली हो?'

'अरे कहां बिटिया! समय तो काटे नहीं कटता।'

'सनोवर! ओ सनोवर! तुम लोग जाग रहे हो या सो गये?'

'अब्दुल आया है,' अब्बू ने खुश होकर कहा।

'आ जाओ बेटा, आ जाओ, दरवाजा खुला हुआ है। कुछ देर पहले आ जाते तो तुम्हें गर्मागरम कहवा पीने को मिलता। हाड़ गलाने वाली सर्दी है आज तो। इतनी रात गये कैसे आ गये?'

'अरे, कहां अब्बू! अभी तो कुल साढ़े सात ही बजे होंगे, कई दिन से आपलोगों के बारे में दरियाफ्त करने की सोच रहा था, पर इधर मुझे एक मोटर वर्कशॉप में काम मिल गया है, इस वजह से आना नहीं हो पाया।' पैसा तो अच्छा देते हैं, पर काम बहुत लेते हैं...सुबह के नौ बजे से लेकर रात के आठ बजे तक घसीटते हैं।'

'तो क्या हुआ? जवानी की उम्र है, जितना काम करोगे, उतना ही पुख्ता होगे और आगे बढ़ोगे।' अब्बू ने खुशी जाहिर की थी।

'पर कल को किसी लड़की से निकाह पढ़वा कर लाऊँगा तो उसे तो बुरा लगेगा...' अब्दुल ने नजरें चुरा कर सनोवर की ओर देखा... जो शान्त भाव से बैठी दूसरी ओर देख रही थी। क्या चांदनी-सा धुला सुनहरी रंग है, क्या सुन्दर नयन-नक्श हैं, कैसी डल झील-सी गहरी नीली-नीली आंखे हैं... ओंठ कैसे लाल हैं मानो लिपिस्टिक लगा रखी हो...और हुस्न? क्या लाजवाब है...' अब्दुल मन ही मन सनोवर के सौन्दर्य को निहार कर उसकी प्रशंसा करता रहा... तभी उसे कुछ याद आया... उसने अपनी जेब से एक लाल रंग की छोटी सी डिबिया निकाली... उसे खोलकर उसने अब्बू और अम्मी के सामने ही सनोवर के हाथ में पकड़ा दिया। 'यह मैं अपनी पहली तनख्वाह से तुम्हारे लिए लाया हूं।' अब्दुल ने कान की बड़ी-बड़ी बालियों के बीच सोने की जड़ाव वाली झुमकियां उसकी हथेलियों के बीच रख दीं। वह स्वयं दूसरी ओर देखने लगा, न जाने क्यों सनोवर की नजरों से नजरें मिलाने में उसे संकोच-सा लगने लगा। सहसा उसने मुस्करा

कर सनोवर की आँखों में आँखें डाल कर कहा, 'जरा पहन कर तो दिखाओ, बहुत जगह ढूंढ कर लाया हूं मैं... निखालिस सोने की हैं। आधा दिन की छुट्टी लेनी पड़ी है वर्कशॉप से... तब से लेकर अब तक शहर की हर सुनार की दुकान देख डाली है मैंने।'

सनोवर ने अपनी पहले से पहनी हुई बालियों को उतार दिया और अब्दुल की लाई झुमकी सहित बालियों को पहन लिया...'देखो अम्मी! कैसी लग रही हैं ये बालियां?'

लैम्प की बत्ती तनिक ऊंची करके सनोवर के मुंह के पास तो लाओ अब्दुल...अब इन आंखों से ज्यादा दीखता नहीं है।

बत्ती ऊँची करके लैंप सनोवर के सामने लाकर अब्दुल ने अम्मी की ओर गर्व से देखा, 'लो देखो अम्मी!...बताओ कैसी लग रहीं हैं?'

'वाह! बहुत ही खूबसूरत है...इसमें सफेद और लाल रंगों का जड़ाव तो निहायत दिलकश है।'

अब्बू ने भी पलभर के लिए अपना चेहरा सनोवर की ओर घुमाया और आँखें उसके कानों में पहनी बालियों पर गड़ा दीं... उनके मुख पर आई मुस्कान स्पष्ट बता रही थी कि उन्हें वह बालियां बेहद अच्छी लगी हैं... 'इन्हें पहन कर तो तू एकदम बेगम नूरजहाँ बानू लग रही है।'

अब्दुल का मन खुश हो गया...सीना चौड़ा हो गया।

'ठक...ठक...ठक...ठक...ठक...ठक दरवाजा खोलो नहीं तो हम इसे तोड़ देंगे।'

'अरे कौन हो तुम? अब्दुल ने तेज स्वर में पूछा।'

'तुम्हारे काल!'

सब लोग चुपचाप बैठे रहे...अम्मी और अब्बू को लग रहा था मानो उनके शरीर की सारी शक्ति किसी ने निचोड़ ली हो। रोज़ ही तो उनके परिचित उन्हें आतंकवादियों के एक से एक हैरतअंगेज, खौफनाक कारनामें सुनाया करते थे...फिर पेपरों में भी सब छपता ही था। रेडियो पर भी इनके कारनामों के बारे में खबरें सुनने को मिलती रहतीं थीं।

पहले वे लोग सीमापार बसी एक छोटी-सी बस्ती में रहते थे... पर इन लोगों से खौफजदा होकर उन्हें इस उजाड़ जगह पर पनाह लेनी पड़ी थी...।

आतंकवादियों ने अन्ततः दरवाजा तोड़ दिया था। उनका सामना अब्दुल ने किया। वह अपने लम्बे कुर्ते में एक तेज छुरा हमेशा छिपाये रखता था। पर वे तीन जने थे, हट्टे-कट्टे और पिस्तौलों से लैस। जैसे ही अब्दुल ने अपना तेज छुरा निकाल कर उनमें से एक व्यक्ति के पेट में भोंक दिया, उसके बाकी दो साथियों ने उसे टंगड़ी मार कर नीचे गिरा दिया।

पहले व्यक्ति ने खटिया से सनोवर को घसीट कर नीचे पटक दिया और उसे निर्वस्त्र कर दिया...।

'ओ बुड्ढे और बुड्ढी! हम चाहते तो आते ही पहले गोली मार कर तुम दोनों को धराशायी कर देते...पर हम तो तुम्हारे सामने तेरी बेटी की इज्जत खराब करेंगे फिर तुझे और इसके मंगेतर को तड़पा-तड़पा कर मारेंगे। हा...हा...हा... तीनों खुलकर हंसने लगे।'

उन दोनों में एक पिस्तौल पकड़े खड़ा रहा, दूसरे ने अब्दुल के हाथ-पैर रस्सी से कस कर बाँध दिये।

'जमीन पर पड़ी सनोवर लाज से पानी-पानी हुई बुरी तरह से तड़प रही थी...पिछली बार भइया उसे एक देशी कट्टा और गोलियाँ दे गया था। उसने सनोवर को निशाना लगाना और कराटे के कुछ जरूरी कारनामे भी सिखा दिये थे जिनसे वह आवश्यकता पड़ने पर अपनी अस्मत की रक्षा कर सके। सनोवर उस देशी कट्टे को हर समय अपने कुर्ते की गुप्त जेब में अपने पास रखती थी। आज वही उसके काम आया। शर्म का नाटक करते हुए उसने करवट बदल कर तत्परता से उसने अपने हाथ ले लिया और बिना एक क्षण गंवाये एक व्यक्ति पर चला दिया। दूसरी गोली उसने निशाना साधकर दूसरे आतंकवादी के सीने पर तथा तीसरी तीसरे आतंकवादियों के पेट में मार दी...पर वे तीनों ही मजबूत थे। गोलियां खाकर, छुरे का वार सहते हुए भी वे सनोवर के ऊपर गिर कर उसके हाथ से कट्टा छीनने और उसे दबोच कर काटने लगे। उनमें से एक अपने कपड़े उतारने लगा। यह देखकर अब्दुल और अम्मी-अब्बू तड़प उठे। अब्दुल तो रस्सी से कस कर बंधा था, उसे उन्होंने बेहोशी की हल्की डोज भी दे दी थी...ताकि गफलत में भी वह लड़की पर होते कदाचार को देखता रहे पर स्वयं को रस्सी काट कर आजाद न कर सके।'

अम्मी, अब्बू और अब्दुल बराबर गालियों की वर्षा कर रहे थे। अब्बू तो उनके साथ हाथापाई करने पर उतर आये थे। तीनों का खून खौल रहा था...वे अपनी ओर से सनोवर को बचाने का भरसक प्रयास कर रहे थे। पर सनोवर समझ चुकी थी कि अब अपनी अस्मत को लूटने से बचाना स्वयं उसी के हाथों में है। वह छः फुटी तनदुरुस्त लड़की थी। कश्मीर के हालात सुन-सुन कर वह अपने आपको इस स्थिति के लिए तैयार करती रही थी। अब्दुल का छुरा आतंकवादियों ने पेट से निकाल कर वहीं पटक दिया था, सनोवर ने उसे उठा लिया और अपनी अस्मत लूटने वाले के गुप्तांग में घुसेड़ कर उसे अपनी लात चलाकर पीछे गिरा दिया। आतंकवादियों ने इसे एक लड़की के हाथों अपना अपमान समझा, अब वह किसी भी तरह उस पर दुष्क्रिया करने के लिए तड़प रहे थे। दो आतंकवादियों ने सनोवर की बांहें पकड़ कर उसे दबोचा, तीसरा उसके ऊपर आया तो सनोवर ने अपना मार्शल आर्ट याद करते हुए उसके गुप्तांग पर वार कर उसे नीचे गिरा दिया... वह आह! आह! करता जमीन पर गिर पड़ा...।

इस बीच मौका देख कर अब्बू ने छुरा उठा कर अब्दुल की रस्सी काट कर उसे आजाद कर दिया। अब्दुल ने झपट कर वहां पड़ी एक पिस्तौल उठा ली और उसमें जितनी गोलियां थी, उससे सभी को मार गिराया। दूसरी पिस्तौल उसने अपने हाथ में रख ली और सनोवर पर बिस्तर से रजाई उठाकर डाल दी।

अपने लात-घूंसों से उन पर वार करके जब यह विश्वास हो गया कि उसके प्राण पखेरु उड़ चुके हैं, उसने वह पिस्तौल और दूर पड़ा देशी कट्टा व छुरा सब बानो के पास रख दिये।

'ऐसा न हो कि इनके कुछ और लोग यहां आ जायें, तुम सतर्क रहना सनोवर। मैं पुलिस को लेकर आता हूं, कुछ समय लग सकता है।'

सनोवर ने ज़ार-ज़ार रोते चीखते अपने माँ-बाप को ढांढस बंधाया और पुलिस के आने का इन्तजार करने लगी।

*

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

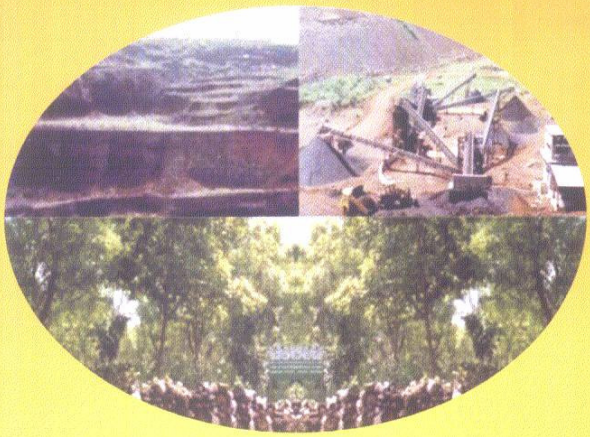

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 27689/277391/021
Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE
SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201
DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 April, 2011
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

T/WB/LM-007
SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
JOINT GENERAL SECRETARY, A.I.M.F
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL

चिट्ठी आई है

जोग लिखी कटक स भाई सीताराम जी शर्म्मा कोलकाता स शान्तिकुमार का जय राम जी को बांचिज्यो। तारीख २६-३-११ नं फोन पर आप स बात हुई ही कि समाज क बारम जो बात लिखी गई है, वह बहुत ही दुःख दाई वाली बात है, आप बोल्या कि इस बात की जानकारी है, और इस विषय म कारवाइ चालु है, और इस बार म जो भी कार्यवाई हुई है, इस का कागज भेजण स देख लेवोग्य जाणकारी मिल ज्यावगी। बात जो सामन आई है, इस स हियो हाल गयो है मालुम देव है कि पानी सर स निकाल गयो है। जो भी बात है साहस स तो काम लेनो ही पड़गो। दुःख इस बात को है कि सम्मेलन आज ७५ साल को हो गयो है, सही मायन म अगर विचार करां तो समाज म जितनी भी जातियां है आज तक आपा १ प्रतिशत भी साथ म नही ले सक्या। आपना पुरवज जिनकी पढ़ाई नही क बराबर ही, लेकिन उनकी सूझ बूझ को लोहो आज आपान माननो पड़गो, आज पढ़ाई को बोल वालो है, लेकिन आज आपा आपनी शाख भी नही बचा पा रिया हा, बात तो या ही हुई कि पढ़ाई कर ली लेकिन गुणिया नही। एक समय वो भी हो कि लुगाया घर स बाहर ही नहीं आती ही, पढ़ण की बात बहुत दूर ही, साथ म इतनी भी बात ही कि जब कभी भी कठइ बाहर म जाता हा तो लुगाया न तो सामान क साथ म गिणती करता हा, आज बात पुरा पुरी उलट गई, वे मुटियारां स पढ़ाई म, या काम काज म कठई पिछ नही है, जब दोन्यु हाथ इतना मजबूत हो गया, तो आपनो स्थान तो पहली पंक्ती म होण को हिसाब हो, लेकिन आज हाशिया म आण की कगार पर आ गया। कितनो वडो उलट फेर, कल्पना क बाहर की बात हो गई। भारत की आजादी क समय आपा पुरा पुरी गांधी जी क साथ हा, और हर काम म आपनो सहयोग हो। जब लोक सभा को गठन हुयो आपना भाई इस म प्रतिनिधी क रूप म सामिल हा। १ भाई तो लगातार ६ या ७ बार चुनाव जीत कर डट कर रिया, उनको नाम ध्यान म नही आरियो है, फेर राम मनोहर लोहिया जी स नेहरुजी भी घबराता हा। एक बात या भी है कि जिनक हाथ म व्यापार है, उनकी निति पर देश चाल है, फेर आपा न सब लक्ष्मी पुत्र भी मान है, और १ हिसाब स या बात गलत भी नही फेर कमजोरी कठ है, कमजोरी अठ है, कि जठ भी और जब भी कोई विषेश कार्य होव है, और आपा जो देश म बड़ा होव है उनान बुलावा, वे आपणा बीच म आक र इस तरह की बात बोल देव तो आपा इतना फूल ज्यावाँ की आपा ही सब कुछ देश का करता धरता हां। वे बिलकुल सुखेड़ ठूंठ की तरह है, जब कि आपा उसका हारियो भरियो रुख मान लेवा, इसी भ्रम म इतना साल बिता दिया, उसको परिणाम आज आसत आसत सामन आ रियो है।

भाषा क आधार पर भी आप पिछ हां, भाषा न भी अभी तक मान्यता नही मिली, जब कि पड़ोसी राज गुजरात, बात चीत गुजराती म कर है, दैनिक समाचार या फिर जिनकी भी पत्रिका सब गुजराती म है, उनको खान पान, पहराव सब अपण हिसाब स है, उस हिसाब म भी आपा पिछ हां, आपां तो सब बात म पैसा न ही परमेश्वर मान कर चाला रिया हां, जबकि संख्या म आपा सब स आग हां, और तो और आज राजस्थान म भी आपा मारवाड़ी म बात नही करां, हिन्दी क साथ-साथ अंग्रेजी म बात करनो चालु कर दिया, अब तो कथा कार भी प्रवचन क समय अंग्रेजी म बोलनी अपनी शान समझ है, दुरभाग्य की चरम सीमा है। जो बी बात है उस पर विचार कर क रास्तो तो बिठानो ही है।

(१) देश हो या विदेश सब जगह आपा हाँ, फेर भी कठ का भी नही।

(२) राजनिती की बाता तो आपा लम्ब समय स कर दिया हां, लेकिन वा केवल बात ही बात है। आप उसस १ कदम भी आग नही बढ़ पाया हां, साथ म या भी बात है, अगर आपा दुसरी पार्टी स टिकट लेकर चुनाव म खड़िया होवांगा तो वैशाखी पर चालनो है, कारण खरचो आपनो प्रचार आपान करनो है, १ बार तो हिम्मत कर पार्टी बणा लेनी ही चाहिज हार जीत तो दोन्यु साथ म है, या शीख तो आपा कई यां स ले सका हा, लेकिन सब स ज्यादा शीख तो राज ठाकरे स मिलगी, बाल ठाकरे तो बाल ही रह गयो और यो दादो बण गयो, केवल इस को आधार महाराष्ट्र म है जब कि आपा सर्व व्यापी हां।

(३) समाज म बहुत संघठन है, सब न १ मंच पर ल्याण स ही काम बणागो, आपा इस बात म इतना कमजोर हो गया, जब कभी भी अगर कठई खड़ियो होण को अवसर आव है, उस समय १ ही क्षेत्र स २या ३ की संख्या म खड़िया पावां तो १ ही जनो नही जित, आपस म बेर भाव भी बढ़ ज्याव और तीसरा न अवसर भी मिल ज्याव।

(४) आज देश म नाम बदल न की बात भी जोर पकड़ लियो है, राजस्थान वेली राज पुतानो हो फेर राजस्थान हो गयो। अब यो नाम रेनो ठीक नही, कारण राजा रिया नही, राजा स राजनिती बण गई, और आज राजनिती नाम लेण स सब न घृणा हो गई, अब तो इस को नाम मारवाड़ हो ज्यावतो हरियाणा वाला को मन भी राजी हो ज्याव।

(५) राजनिती क स्थान पर राष्ट्र नितीया, देश निती हो ज्याव तो ठीक रवे, या बात सब क समझ म आनी चाहिज।

(६) उड़िसा कोई समय म कलिंग देश हो, बाद म उत्कल हुयो, फेर उड़िसा हुयो अब ओड़िसा हो गयो है।

(७) आजादी क पेलि कांग्रेस को नारो हो कि पुंजिपतियां को नाश हो, उस समय पुज्य पिताजी उनान बोलता हा कि जो भी बोलो हो ठीक बोलनो चाहिज, इस की जगह बोलो गनीवी का नाश हो, लेकिन या बात उनक समझ म नही आई, आज जो बात है, उसको परिणाम सब क सामन है।

(८) भारत देश सोन की चिड़िया ही, और आज भी है, इस म तनिक भी कठई शंका वाली बात नही, फेर भी देश म भूख भरी और बिमारी को अन्त पार नही, यो पुरा पुरी आपनी अज्ञानता या देख कर आंख बंध कर लेन को है।

(९) कलकता म सम्मेलन को अधिवेशन जब सहम्मद अलि पार्क म हो, उस समय उस म सामिल होण को सोभाग्य मिल्यो हो।

(१०) मनिषी लाला लाजपतराय जी क बारम पुज्य गांधीजी का विचार हा कि अगर लालाजी नही होता तो आजादी मिलनी सहज बात नही ही, जब समाज म इस-इस तरह का जनक हो गया और आज आपया उनकी सन्तान अशाय को जीवन जी रिया हां, जबकि आपा सब तरह स समृथ हां।

(११) आप पुछिया कि सम्मेलन का सदस्य हो या नही तो आपन नही करनो पड़ियो जबतक सालाना १०० को हिसाब हो, वा राशी सब क लिय ठीक ही। जब १ साथ ५ हजार हो गया तो रुपया न महत्व दे दियो, सदस्य बढ़ाण की बात नही रही, इस की चर्चा भाई गणेश जी कन्दोई भी भरी ही लेकिन बात बठ ही रह गई।

(१२) जितनी बाता ध्यान म आई सब सामन रख दी है, निराश होण की कोई बात नही सूझ बूझ स काम लेण की जरुरत है।

(१३) आपको पत्र आण क बाद म और जो भी बात होवगी फेर कर लेवांगा।

धन्यवाद

– शान्तिकुमार अग्रवाल
महकाब रोड, कटक - ७५३०१२, उड़ीसा

सम्पादकीय

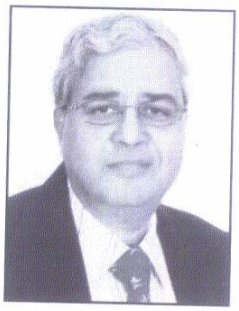

हिन्दीभाषियों के लिए राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी जरूरी

– सीताराम शर्मा

हिन्दी भाषियों के राजनैतिक प्रतिनिधित्व का प्रश्न जितना महत्वपूर्ण है उतना ही आवश्यक है हिन्दीभाषियों में राजनैतिक चेतना, राजनैतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी एवं सर्वोपरि अधिकतम मतदान। आपका वोट ही आपको राजनैतिक प्रतिनिधित्व प्रदान करा सकता है।

गत चुनावों में हिन्दीभाषी बाहुल्य विधानसभा क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत बहुत अच्छा नहीं रहा है। वास्तव में यह निराशाजनक रहा है। पश्चिम बंगाल में १९५२ के प्रथम विधानसभा चुनाव के बाद में कुल मतदान में लगातार वृद्धि हुई है। प्रथम चुनाव में मतदान का प्रतिशत था ५९.६० जबकि यह गत २००६ के चुनाव में बढ़कर ८१.०५ प्रतिशत तक पहुंच गया। कुल मतदान की तुलना में हिन्दीभाषी बाहुल्य विधानसभा क्षेत्रों में मतदान बहुत ही कम रहा है। वास्तव में सबसे कम मतदान ४२.१२ प्रतिशत बड़ाबाजार विधानसभा चुनाव क्षेत्र में हुआ जो राज्य के औसत मतदान से प्रायः आधा था। इस क्षेत्र के ६५८९२ कुल मतदाताओं में से केवल २७७६३ वोटरों ने मतदान किया। ऐसी ही मिलती जुलती स्थिति अन्य कई हिन्दीभाषी बाहुल्य विधानसभा क्षेत्र में गत २००६ के चुनावों में रही - जोड़ाबागान (५५.१९ प्रतिशत), जोड़ासांकू (५०.९१ प्रतिशत), बड़ाबाजार (५४.४१ प्रतिशत), चौरंगी (५०.९७ प्रतिशत), कवितीर्थ (५३.२९ प्रतिशत), काशीपुर (६८.१७ प्रतिशत), अलीपुर (६०.२३ प्रतिशत), बालीगंज (६५.३५ प्रतिशत), हावड़ा उत्तर (६६.२७ प्रतिशत), आसनसोल (६३.३९ प्रतिशत), हावड़ा दक्षिण (६४.१५ प्रतिशत), गार्डनरीच (६०.७० प्रतिशत)।

पश्चिम बंगाल के अधिकतर विधानसभा क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत ७५ से ८० प्रतिशत के बीच था। करीबन १५ विधानसभा क्षेत्रों में तो ९० प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ। हिन्दीभाषी बाहुल्य क्षेत्रों में जबकि यह प्रतिशत ४५ से ६५ के बीच रहा। स्पष्टतः हिन्दीभाषी मतदाता मतदान के प्रति उदासीन रहे हैं। यह एक विचारणीय विषय है। पश्चिम बंगाल में अपनी बड़ी जनसंख्या और लगभग प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान एवं भूमिका के बावजूद हिन्दी भाषी राज्य की राजनीति में हमेशा हाशिये पर ही रहे हैं। राज्य की राजनीति में उनका प्रतिनिधित्व उनकी आबादी के अनुपात में प्रायः नगण्य सा ही है। हिन्दीभाषियों की इस स्थिति के लिए कौन से लोग या कारण जिम्मेवार हैं? राजनैतिक दल, राज्य की राजनीति या हिन्दीभाषी स्वयं। हिन्दी भाषी विधायकों की संख्या में लगातार कमी हुई है। १९५२ की विधानसभा में जबकि कुल सदस्यों की संख्या १८७ में से ११ हिन्दी भाषी विधायक थे। वहीं २००६ के गत चुनाव में कुल विधायकों की संख्या हालांकि बढ़कर २९४ हो गयी, यानि १९५२ की तुलना में १०७ सीटों की बढ़ोतरी, लेकिन हिन्दीभाषी विधायकों की संख्या ११ से घटकर ६ रह गयी। पिछले सात दशकों में हिन्दीभाषियों की राजनैतिक हैसियत की गिरावट का इससे अधिक और क्या प्रमाण हो सकता है कि एक समय में पश्चिम बंगाल विधानसभा के अध्यक्ष हिन्दीभाषी ईश्वर दास जालान रहे तथा स्वतंत्रता के पश्चात जन प्रतिनिधित्व नियम १९५० के अंतर्गत गठित पश्चिम बंगाल विधानसभा (अपर हाउस) की प्रथम बैठक (१८ जून १९५२) एक अन्य जाने माने हिन्दीभाषी राजनेता विजय सिंह नाहर की अध्यक्षता में हुई, वहीं पिछले ३० वर्षों से अधिक से पश्चिम बंगाल मंत्रिमंडल में एक भी हिन्दी भाषी मंत्री नहीं रहा है। बंगाल में हिन्दी भाषी मंत्री के संदर्भ में सम्भवतः कम लोग जानते हैं कि स्वतंत्रता के पूर्व ३० जून १९४७ को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने पश्चिम बंगाल के प्रथम मुख्यमंत्री डा. प्रफुल्लचंद्र घोष को एक पत्र लिखकर सुझाव दिया था, 'सरदार बल्लभ भाई पटेल ने मुझे एक संदेश भेजा है कि आपके मंत्रिमंडल में एक मारवाड़ी मंत्री होना चाहिए। मुझे लगता है कि यह करना उचित होगा, नहीं करना अनुचित होगा।' पश्चिम बंगाल के लोकसभा में हिन्दीभाषियों का निर्वाचन भी इक्का - दुक्का ही रहा है। १९५२ से २००९ के बीच हुए १५ संसदीय चुनावों में इने-गिने हिन्दीभाषी प्रार्थी ही संसद पहुंच पाये हैं। १९६७ में विजय सिंह नाहर (जनता), १९८० एवं १९८४ में मेदिनीपुर से सीपीआई उम्मीदवार नारायण चौबे, १९९१ एवं २००९ में दार्जिलिंग से इन्द्रजीत (कां.) एवं जसवंत सिंह (भाजपा) क्रमशः निर्वाचित हुए, जो मूलतः बंगाल से नहीं हैं। पिछले ५८ वर्षों में कुल १० हिन्दीभाषी बंगाल से राज्यसभा के लिए निर्वाचित हुए हैं, इनमें से पिछले ३० वर्षों में केवल तीन सरला माहेश्वरी (माकपा), चन्द्रकला पाण्डे (माकपा) तथा दिनेश त्रिवेदी (टीएमसी) राज्यसभा भेजे गये हैं। २००६ की विधानसभा में २९४ की कुल सदस्यता में मुस्लिम विधायकों की संख्या ४४ है, जबकि १९५२ में १८७ की कुल सदस्यता में यह संख्या २३ थी। आबादी के अनुपात में यह वृद्धि हुई है। खुशी का बात है कि पश्चिम बंगाल विधानसभा में महिला विधायकों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। १९५२ में केवल ७ महिलाएं विधायक थीं जो २००६ में बढ़कर ४१ तक पहुंच गयी है। सूचीगत जातियों की आरक्षित सीटों में भी समयानुसार वृद्धि हुई है। १८५८ में आरक्षित सीटों की संख्या ५२ थी जो २००६ में बढ़कर ७६ हो गयी।

चिट्ठी आई है

उसी से कुछ कहना-बताना चाहिए जो सुनने की स्थिति में हो। जिसमें संवेदना हो, समाज के प्रति आस्था हो। 'समृद्ध सुखी परिवार' पत्रिका के मार्च-२०११ अंक में छपे आपके विचारों से आपके समाजनिष्ठ व्यक्तित्व की याद लगी। मारवाड़ी समाज तो फिर भी कम; दूसरे समाजों की स्थिति तो सर्वथा शर्मनाक है। संपूर्ण मानवीय समाज अमानवीय - असामाजिक होने लगा है। आपकी छटपटाहट मैं समझ सकती हूँ।

इस पत्र के साथ मेरे काम से संबंधित एक मुद्रित प्रपत्र संलग्न है। फुरसत के पलों में इसे विचार पूर्वक पढ़ेंगे तो मेरी पीड़ा का अनुभव भी आप कर लेंगे। मनुष्यता के मद्देनजर अनुचित - असंभव न लगे तो मेरी स्थिति – परिस्थिति को देखते हुए किंचित सहयोग देने या दिलाने का प्रयास करेंगें। सामग्री को प्रकाशित करके मार्गदर्शक-सहायक तलाशने में कृपया सहयोगी बनें।

सभी तरह के लेखनों, भाषणों, प्रवचनों में या तो हालात का वर्णन करके जिम्मेदार घटकों को कोसा जाता है या फिर 'शुभ' के लिए उपदेश दिया जाता है। ऐसा करना 'चाहिए', वैसा होना 'चाहिए' अर्थात सब कुछ चाहिएवाद को समर्पित। जीवन वाणी - लेखनी का विशेषण, पाखण्ड मात्र का पर्याय बनकर रह जाता है। जीवन को करनी का पर्याय बनाने वाले मुझ जैसे लोगों का किंचित साथ वे लोग भी नहीं देते जो वाणी - लेखनी द्वारा बड़े-बड़े आदर्शों – सिद्धान्तों की गंगा बहाने में लगे रहते हैं।

– **अहुजा - नीलम**
१५४, पत्ता मौ., बागपत गेट,
मेरठ सिटी - २५०००२ (उ.प्र.)

आपको सूचित करना चाहता हूँ कि मैंने सत्यभामा डोकनिया सरस्वती शिशु मंदिर के नाम से एक प्राथमिक विद्यालय के लिये एक विद्यालय भवन का निर्माण देवधर जिले के वसई ग्राम में करवाया था। अभी उस विद्यालय में १५० विद्यार्थी शिक्षा लाभ कर रहे हैं।

कुछ दिनों पहले ही, भागलपुर जिले के झंडापुर पोस्ट आफिस के ओलियाबाद गाँव में मेरे दिवंगत पिता की स्मृति में वृजमोहन डोकनिया सरस्वती शिशु मंदिर के नाम से एक भवन का निर्माण करवाया है। यह विद्यालय डोकनिया चैरिटेबुल ट्रस्ट, कलकत्ता द्वारा प्रायोजित है कि इस विद्यालय का उद्घाटन २१ मार्च २०११ को सम्पन्न हुआ।

ठनठनिया कालीबारी कलकत्ता में ६ मास पहले एक शीतल पेय जल की मशीन मेरी दिवगंत पत्नी सत्यभामा डोकनिया की स्मृति में स्थापित की गई थी, जहाँ पर प्रातः से रात्रि १० बजे तक शीतलपेय की व्यवस्था है।

— **एस. एल. डोकनिया**

नमस्कार, राम राम सा

मार्च २०११ - वर्ष ६१ - अंक ३ प्राप्त हुआ आवरण आकर्षक है। इस अंक में कई बातें बड़ी जानकारीपूर्ण प्राप्त हुई है - एतदर्थ धन्यवाद।

(१) सम्पादकीय-हिन्दी भाषी चुनाव क्षेत्रों में गिरता मतदान - आपने १९५२ से २००६ तक के आंकड़े प्रस्तुत कर हिन्दी भाषियों को राजनैतिक चेतना हेतु जागृत व प्रेरित किया है।

(२) महामंत्री श्री संतोषजी सराफ ने समाज में हुये मूल्य ह्रास पर चिन्ता व्यक्त की है।

(३) बिहार प्रा.भा.स. के निवर्तमान अध्यक्ष ने भी समाज में फैली कुरीतियों पर चिन्ता व्यक्त की है।

(४) श्री सीताराम शर्मा ने बंगाल में हिन्दी भाषियों की राजनैतिक हैसियत पर विस्तृत चर्चा की है। स्वतन्त्रता से पूर्व काल से अबतक तुलनात्मक आंकड़े प्रस्तुत कर पाठकों की जानकारी बढ़ाई है। हर विधान सभा में लोकसभा में हिन्दी भाषियों की वस्तुस्थिति पर पूर्ण प्रकाश डाला है। यह लेख लेखक की जानकारी को विस्तार से प्रचारित कर हमारी आँखें खोलता है। श्री सीतारामजी को बहुत-बहुत साधुवाद।

(५) श्री मनमोहन बागड़ी का लेख 'जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है'। यह लेख बड़ा रोचक है एवं प्रेरक है।

(६) श्री ओम लडिया का जीवन संध्या पर कटु सच्चाई नामक लेख समाज में बीत रही घटनाओं को दर्पण की तरह प्रस्तुत करता है। लेखक के मन में दर्द है। हर पाठक लडियाजी के लेखन पर दर्द का अनुभव करेगा ऐसा मेरा विश्वास है। आदमी की आदमियत जब गिर जाती है तब वह माँ बाप को खबती समझते हैं। मैं एक संस्था के वृद्ध निवास का संचालन करता हूं। आजकल लोग वृद्ध मां-बाप को बोझ समझते हैं। घर में एक-एक तरह-तरह से कमरे होते हुए वृद्ध मां-बाप के लिये स्थानाभाव महसूस करते हैं। मैंने सारी परिस्थितियां नजदीक से देखी हैं। मै लडियाजी से पूर्ण सहमत हूँ। मैं मानता हूँ सारी गलती केवल संतान की ही नहीं होती। वृद्ध माता-पिता को भी सन्तान से मित्रवत व्यवहार करना चाहिये। नीति के वचन हैं। "प्राप्ते युवा वर्षे पुत्रं मित्रवत समाचरेत"।

(७) नये संवतवर्ष पर लेख विस्तृत ज्ञान वृद्धि करता है।

(८) श्री संजय हरलालका ने भी प. बंगाल की राजनीति में हिन्दी भाषियों को हासिये पर देखा है।

कुल मिलाकर यह अंक आकर्षक, ज्ञानवर्द्धक, प्रेरक है।

संकलन सम्पादन के लिये अनेकानेक बधाई।

– **श्यामलाल जालान**

अध्यक्षीय

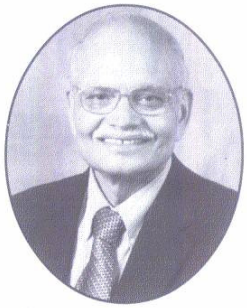

जीवन का मूल मंत्र हो 'सादगी'

– हरि प्रसाद कानोड़िया

मातृशक्ति, भाईयों, साथियों, एवं प्रिय युवा,

राम राम

राधे राधे

संसार धन के लोभ के सागर में डूब रहा है। चारों तरफ लोभ-लोभ-लोभ की पुकार है। लोभ की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है। सामाजिक और वैवाहिक कार्यक्रमों में आडम्बर हो रहा है। लोग लोभ के वशीभूत हो रहे हैं। लोग समझते हैं आडम्बर से उनकी समाज में इज्जत बढ़ती है। हमारी साख गहरी मालूम होती है। ऐसा भी होता है, लोग कर्ज लेकर भी अपनी साख बनाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु समझने वाले समझते हैं।

विनम्रता से मैं अपने परिवार का उदाहरण देता हूं। शायद १८८०/९० में राजस्थान से निकले। १९२०/२५ तक पूरे भारत में व्यापार स्थापित किया। व्यापार, खाद्य, तिलहन, कपास और धातु को छोड़कर सभी में श्रेष्ठ था।

हमारा परिवार धनी था। मेरे पितामह सादगी से रहते। अपने लिए ३-४ कपड़े ही रखते। समाज की सेवा करते थे। धर्मशाला, मन्दिर, अस्पताल सभी तरह की सेवा में उनका योगदान रहता। इससे बच्चों में अच्छे संस्कार हुए। हमें स्वयं को परिवार में आदर्श स्थापित करना है। बच्चों के विद्रोह के तूफान को हंसते-समझते आगे आदर्श की राह पर चलना है।

सेठ लक्ष्मीनारायण दो जोड़ा अच्छी (प्रेमसुख) धोती परमहंस श्री राम कृष्ण जी के लिये ले गये। परमहंस ने कहा 'मैं तो पहनता नहीं हूँ, मैं तो मोटी-छोटी (सात हाथ की) धोती पहनता हूँ।' एक बार सेठजी कुछ रुपया दे रहे थे, तो उन्होंने कहा मुझे जरुरत नहीं है। सेठजी के मन में दुःख न हो तो कह दिया कि जाओ माँ से पूछ लो। माँ ने कहा – बेटा मुझे जरुरत नहीं है। माँ काली जीवन की जरुरतें पूरी कर देती हैं।

स्वामी रामसुखदासजी एक ऐसे सन्त हुए, वे पण्डाल में सभी कार्यक्रम में सादगी रखते थे। सादगी नहीं रहने से नाराज़ हो जाते थे। हम आडम्बर के लिये विद्रोह नहीं करना चाहते। कड़ाई से या गाँधीगीरी से भी रोकना नहीं चाहते हैं। हम आत्मा में चेतना और जागरूकता लाना चाहते हैं। हमें सीख लेनी है खून की नदियों से भूखे - तड़पते लोगों की चित्कार से, कई देश में जैसे तिनिसीया, मिक्षलिवीया के विपल्व से। चलते लोग कहते हैं, माड़वाड़ियों के पास पैसा है। देखो कैसे दिखावा करता है। चोरी, बेइमानी, मिलावट करके पैसा बनाता है। हमें उनका मुँह बन्द करना है।

स्वामी विवेकानन्द रामकृष्ण मिशन बेलुरमठ की स्थापना करने के लिए प्रयास कर रहे थे। भारत में उनको मदद नहीं मिली। पहले १००० पौंड लंडन से मिला। उन्होंने कहा मुझे दुःख है, भारत में हम जुलूस, जश्न, उत्सव, आडम्बर में विशेष खर्चा करते हैं, परन्तु अच्छे काम के लिए मदद नहीं मिलती है।

स्वामी विवेकानन्द रामकृष्ण मिशन बेलुरमठ की स्थापना करने के लिए प्रयास कर रहे थे। भारत में उनको मदद नहीं मिली। पहले १००० पौंड लंडन से मिला। उन्होंने कहा मुझे दुःख है, भारत में हम जुलूस, जश्न, उत्सव, आडम्बर में विशेष खर्चा करते हैं, परन्तु अच्छे काम के लिए मदद नहीं मिलती है।

आइये – हम आवाहन करें सभी कायक्रर्मो में सादगी, प्रेम-स्नेह का वातावरण बनाने का। जिस तरह हमारे पूर्वज सादगी से रहते थे। राजस्थान से पूरे भारत के कोने-कोने में फैल गये। अपना व्यापार किया। लक्ष्मी माँ की अनुकम्पा से पूर्वज क्या लेकर आये थे। खाली हाथ। सादगी थी, साहस था, कुछ कर दिखाने का स्वयं बनने का इरादा था। किसी के सामने हाथ नहीं फैलाये। लक्ष्मी पुत्र बन कर रहे। जहाँ भी गये वहाँ अपनी कमाई का दस प्रतिशत वहॉ के लोगों की सेवा में व्यय किया। स्थानीय लोग कितने भी कठोर हों उनकी सेवा निर्मल और विनम्र स्वभाव के कारण आदर करते थे। अभी भी कई जगह कर रहे हैं। हमें जागना है। हम परिवार, समाज, देश के अंग हैं। उनसे अलग नहीं हैं। अपने स्वार्थ और आडम्बर के चक्रव्यूह से निकलना हैं। अपना परोपकार ही रह जायेगा। संत तुलसीदास जी कहते हैं जिसके दिल में परहित उसी के हृदय में राम बसते हैं।

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

मतदान का महत्व

सम्मेलन का राजनैतिक चेतना महाअभियान

गोष्ठी में वक्तव्य रखते हुये सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, मञ्चस्थ हैं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सन्तोष सराफ, पत्रकार श्री राजीव हर्ष एवं श्री शंभु चौधरी

कोलकाता। राज्य में हो रहें विधानसभा चुनाव के ठीक पहले अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा समाज में राजनैतिक जागरूकता लाने के उद्देश्य से दी कलकत्ता ट्रामवेज कम्पनी हॉल में 'मतदान का महत्व' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने इस बात पर गहरी चिन्ता जताई कि प. बंगाल में हमारा समाज राजनीति के क्षेत्र में लगातार पिछड़ता जा रहा है। इसके लिये बदलती राजनैतिक परिस्थिति के साथ-साथ समाज को भी वक्ताओं ने दोषी ठहराया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि मतदान के माध्यम से हम अच्छे लोगों को राजनीति में आगे ला सकते हैं जिससे कि निरन्तर भ्रष्ट होती जा रही राजनीति में सुधार हो सकेगा और देश तथा हमारे समाज का भविष्य उज्ज्वल होगा। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं समाजचिन्तक श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि हमारे हितों की रक्षा हेतु हममें राजनैतिक चेतना का संचार जरूरी है। सम्मेलन ने हरदम समरसता की बात की है इसलिए हम यह कभी नहीं कहते कि हम अपने समाज के लोगों को वोट दें। बल्कि हमारा कहना है कि अगर आप मतदान नहीं करते हैं तो आर्थिक नीतियों को लेकर आप अपनी आवाज सत्ता तक नहीं पहुँचा सकते। आपने कहा कि बंगाल के साहित्य व संस्कृति से जुड़कर ही हम राजनीति में अपनी पहचान बना सकते हैं। मतदान न कर हम देश के साथ-साथ अपने भविष्य से भी खिलवाड़ कर रहे हैं। राजनैतिक चेतना मंच के मंत्री श्री शम्भु चौधरी ने कहा कि हमारे समाज में एक ओर जहां सम्पन्नता है वहीं राजनैतिक दरिद्रता है। अगर हम मतदान करेंगे तो ही सत्ता में बैठे लोग हमारी बात सुनेंगे, नहीं तो हमारा समाज गूँगा कहलायेगा। पत्रकार राजीव हर्ष ने कहा कि अगर हम समझदार हैं तो हमें मतदान अवश्य करना चाहिए। हमारा मतदान ही देश की दिशा तय करता है। श्री नन्दकिशोर अग्रवाल ने कहा कि मारवाड़ी जहां भी जाते हैं, वहां अपनी पहचान बनाते हैं। बंगाल में भी हमें अपनी राजनैतिक पहचान बनानी है। श्री विश्वनाथ सिंहानिया ने कहा कि राजनीति में कुछ गंदे लोगों के आने से हम इससे दूर होते चले गये। हम अगर सचेत हो गये तो हमारे सामने कोई नहीं टिक पायेगा।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। संचालन संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका ने किया। हम मौके पर सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, संयुक्त मंत्री श्री कैलाशपति तोदी, संयोजक दिलीप गोयनका, सह संयोजक विष्णु पोद्दार, जयगोविन्द इन्दौरिया, विश्वनाथ सराफ, रामनिवास चोटिया, प्रेमचन्द सुरेलिया, ओम लडिया सहित अन्य उपस्थित थे।

मतदान का महत्व विषय पर आयोजित गोष्ठी में उपस्थित गणमान्यजन।

राजनैतिक चेतना मंच द्वारा पूर्वांचल विद्या मंदिर में आयोजित मतदाता जागरूकता सभा में मञ्चस्थ हैं बायें से सर्वश्री राजीव हर्ष, प्रह्लादराय गोयनका, सीताराम शर्मा, दीनदयाल गुप्ता, कमल गांधी, संजय हरलालका, शंभु चौधरी, रमाकांत बेरीवाल एवं नन्द किशोर अग्रवाल।

समाज को जगाना है, वोट देने जाना है

- राष्ट्र की प्रगति के लिए मतदाताओं को जरूर मतदान करना चाहिए। – **श्री हरि प्रसाद कानोड़िया**
- अपना प्रतिनिधित्व पाने के लिए हमें मतदान करना चाहिए अन्यथा आपका प्रतिनिधित्व खत्म हो जायेगा। – **श्री सीताराम शर्मा**
- हमारा यह नैतिक अधिकार एवं कर्तव्य है। मतदान से समाज, राज्य एवं राष्ट्र की सेवा का अवसर हमें निभाना है। – **श्री नन्दलाल रुँगटा**
- देश के भविष्य के लिए हमारे पास केवल एक ही अधिकार बचा है जिसका प्रयोग हमें हर हाल में करना चाहियें। – **श्री ओमप्रकाश पोद्दार**
- यह एक सजग नागरिक की संविधान के तहत जिम्मेदारी है और उसका अधिकार भी, जिसका निर्वाह करना जरूरी हैं। – **श्री कमल गांधी**
- सरकार गठन एवं देश के भविष्य निर्माण में अपनी भागीदारी निभाने के लिए हमें जरूर मतदान करना चाहिए। – **श्री जुगल किशोर जैथलिया**
- अपनी पहचान को बनाये रखने के लिए हमें मतदान करना चाहिए । – **श्री दिनेश बजाज** (विधायक)
- भविष्य की सुरक्षा एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हमें अपने लोकतांत्रिक अधिकारों का प्रयोग करना ही चाहिए। – **श्री नन्द किशोर अग्रवाल**
- मतदान हमारा राष्ट्रीय पर्व है जिसे सभी वर्गों के सहयोग से ही मनाया जा सकता है। – **श्री पुष्करलाल केडिया**
- मतदान लोकतंत्र का सबसे बड़ा हथियार है। – **श्री प्रकाश चंद अग्रवाल** (पत्रकार)
- लोकतंत्र में वोट देने का अधिकार ही नहीं, यह हमारा कर्तव्य है। – **श्री रतन शाह**
- लोकतंत्र में महत्वपूर्ण वही है जो मतदान करते हैं। जो नहीं करते उनकी कोई पूछ नहीं होती। – **श्री राजीव हर्ष** (पत्रकार)
- देश के नागरिक होने के कारण यह हमारा नैतिक दायित्व बनता है। – **श्री विजय गुजरवासिया**
- अपने मताधिकार का प्रयोग हम सबकी लोकतांत्रिक शक्ति है जिसे मतदान के जरिये ही आंका जा सकता है। – **श्री शंभु चौधरी**
- मतदान न कर हम अपना वर्तमान तथा भावी पीढ़ी का भविष्य खराब कर रहे हैं। – **श्री संजय हरलालका** (पत्रकार)

मतदान के प्रति समाज के लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से सम्मेलन ने कलकत्ता महानगर एवं आसपास के अंचलों में जन-जागृति अभियान चलाया जिसके तहत जगह-जगह पर मतदान के प्रति समाज के लोगों को प्रेरित करने हेतु होर्डिंग लगाये गये। चित्र में परिलक्षित है ऐसी ही एक होर्डिंग

- वोट देना मतदाताओं का नैतिक दायित्व एवं मौलिक अधिकार है। – **श्री कैलाशपति तोदी**
- लोकतंत्र में वोट देना हर नागरिक का केवल अधिकार ही नहीं, उससे कहीं ज्यादा उसका कर्तव्य भी है। – **श्री शिशिर बाजोरिया**
- हमें अपने पसंद की सरकार चुननी है तो मतदान करना ही होगा। – **श्री सुरेन्द्र सिंह** (पत्रकार)
- अच्छी सरकार बनाने एवं लोकतंत्र को जीवित रखने के लिए मतदान जरूरी है। – **श्री शांतिलाल जैन**

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

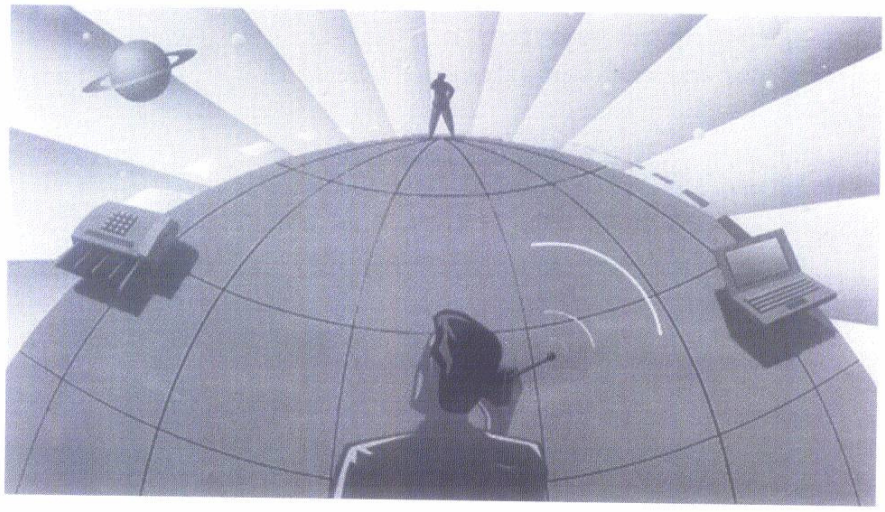

Independent entity with over 38,000 towers and over 83000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive
ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

पश्चिम बंगाल की राजनीति में मारवाड़ी

– सीताराम शर्मा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

संभवतः अधिकांश लोग इस तथ्य से अपरिचित हैं कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की १९३५ में स्थापना के पीछे मुख्य प्रेरणा एवं कारण राजनैतिक था। १९३५ के भारत विधेयक में नवीन विधान की रूप रेखा में ऐसा संकेत दिया गया था **"जो देशी राज्यों की प्रजा है उसे ब्रिटिश राज्य की प्रजा के नागरिक अधिकार नहीं दिये जायेंगे"**। इस प्रावधान ने आशंका को जन्म दिया कि मारवाड़ी समाज के व्यक्ति जो विभिन्न प्रदेशों में बसे हुए हैं उन्हें देशी राज्यों की प्रजा मानकर यदि नागरिक अधिकार नहीं प्राप्त हुए तो ये देश भर में विदेशियों की तरह समझे जायेंगे। ऐसा होने से न तो उनको वोट का अधिकार होगा और न कोई नागरिक अधिकार। **श्री ईश्वरदास जालान ने स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए श्री बद्रीदास गोयनका, श्री घनश्यामदास बिड़ला, देवीप्रसाद खेतान, श्री रामदेव चोखानी, श्री मदन मोहन मालवीय** आदि से विचार-विमर्श किया एवं उस समय के सुप्रसिद्ध बैरिस्टर सर एन.एम. सरकार को विलायत भेजकर आवश्यक संशोधन का प्रयास किया गया। भारत के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट ने संशोधन प्रस्ताव प्रस्तुत करते समय कहा कि **"मारवाड़ी समाज की कठिनाईयों को दूर करने के लिये यह संशोधन किया जा रहा है"**। इसी के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का जन्म हुआ।

मुहम्मद अली पार्क में दिसम्बर १९३५ में आयोजित सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता सनातनी दल के प्रमुख नेता श्री रामदेव चोखानी ने की एवं जहाँ पारित प्रमुख प्रस्ताव में कहा गया – **"यह सम्मेलन मारवाड़ी भाईयों से अनुरोध करता है कि वे नागरिक एवं राजनैतिक समस्त देशोन्नति के कार्य में दिलचस्पी लें और उनके चुनाव में सम्मिलित होकर तथा उनमें प्रवेश करके देशवासियों की सेवा करने का सुयोग प्राप्त करें।"**

मुहम्मद अली पार्क में दिसम्बर १९३५ में आयोजित सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता सनातनी दल के प्रमुख नेता श्री रामदेव चोखानी ने की एवं जहाँ पारित प्रमुख प्रस्ताव में कहा गया – "यह सम्मेलन मारवाड़ी भाईयों से अनुरोध करता है कि वे नागरिक एवं राजनैतिक समस्त देशोन्नति के कार्य में दिलचस्पी लें और उनके चुनाव में सम्मिलित होकर तथा उनमें प्रवेश करके देशवासियों की सेवा करने का सुयोग प्राप्त करें।"

७२ वर्ष उपरांत २००७ में सम्मेलन ने पुनः राजनैतिक चेतना के विकास एवं सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता के अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम हाथ में लिया। मैंने २००६ में अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करते समय भुवनेश्वर में नारा दिया था **"कोषाध्यक्ष नहीं अध्यक्ष बनो"**, अर्थात् धन के प्रभाव से प्राप्त पद की बजाय जमीन की राजनीति से जुड़कर ताकत प्राप्त करें। इसी संदर्भ में प्रांतीय स्तर पर विभिन्न राज्यों में मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

ऐसी बात नहीं है कि मारवाड़ी राजनीति में एकदम सक्रिय नहीं हैं या उन्हें देश की राजनीति में भाग लेने से कोई परहेज है लेकिन यह बात भी कुछ सीमा तक सत्य है कि राष्ट्र की राजनीति में हमारा जो रूतबा एवं स्थान होना चाहिए वह अभी तक नहीं बन पाया है। एक सोच एवं विचार यह रहा है कि स्वयं राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने की बजाय उन राजनेताओं की सहायता करें जो उनके हितों की रक्षा कर सके एवं उनके प्रश्नों को उठा सके। हम व्यापारी हैं एवं व्यापारिक समाज को सक्रिय राजनीति से दूर रहना चाहिये। इस सोच की वैधता एवं सफलता के विषय में नये सवाल खड़े हुए हैं एवं अब तक परिवर्तन स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। नतीजन समाज में राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं की संख्या में एक बढ़ोत्तरी हुई है। १९५० एवं १९६० के दशकों में समाज के शीर्षस्थ उद्योगपति संसद एवं विधान सभा में गये लेकिन परवर्ती काल में एक अभाव दिखायी पड़ा। बिड़ला घराने के श्री कृष्ण कुमार बिड़ला द्वारा लोकसभा के लिये चुनाव लड़ना एक महत्वपूर्ण मोड़ था जिसने इस सोच पर लोगों को सोचने के लिये विवश किया। हाल के वर्षों में श्री राहुल बजाज ने राज्यसभा के लिये चुनाव लड़ा।

सम्मेलन के ७२वें स्थापना दिवस समारोह में उद्घाटन के लिये पधारे लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी ने सम्मेलन के राजनैतिक चेतना एवं सक्रिय भागीदारी के आह्वान का जोरदार समर्थन किया। जागरूक, निर्भीक एवं कुशल संगठक एवं वक्ताओं को राजनीति में प्रवेश कर अपनी मेहनत, ईमानदारी एवं दक्षता से अपना विशिष्ठ पहचान स्थापित करनी चाहिये। प्रायः कहा जाता है कि राजनीति में बहुत गंदगी है। यह कुछ सीमा तक सत्य भी है। लेकिन अगर सभी अच्छे एक साफ छवि के व्यक्ति राजनीति से परहेज करेंगे तो सिर्फ गंदगी ही रह जायेगी। राजनीति केवल देश की प्रशासन व्यवस्था तक सीमित नहीं है, आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों का निर्धारण उसका एक अहम पहलू है, मारवाड़ी समाज को देश की भावी नीति एवं दिशा निर्धारण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की जरूरत है।

सम्मेलन के ७२वें स्थापना दिवस समारोह में उद्घाटन के लिये पधारे लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी ने सम्मेलन के राजनैतिक चेतना एवं सक्रिय भागीदारी के आह्वान का जोरदार समर्थन किया। जागरूक, निर्भीक एवं कुशल संगठक एवं वक्ताओं को राजनीति में प्रवेश कर अपनी मेहनत, ईमानदारी एवं दक्षता से अपना विशिष्ठ पहचान स्थापित करनी चाहिये। प्रायः कहा जाता है कि राजनीति में बहुत गंदगी है। यह कुछ सीमा तक सत्य भी है। लेकिन अगर सभी अच्छे एक साफ छवि के व्यक्ति राजनीति से परहेज करेंगे तो सिर्फ गंदगी ही रह जायेगी।

स्वतंत्रता के पूर्व

पश्चिम बंगाल में अपनी बड़ी जनसंख्या और लगभग हर क्षेत्र में अगुवा होने के बावजूद मारवाड़ी राजनीति में हमेशां हाशिये पर ही रहे हैं। इस स्थिति में एक लगातार गिरावट स्पष्ट है। स्वतंत्रता के पूर्व अविभाजित बंगाल की प्रथम विधान सभा (१९३५-१९४५) में ५ मारवाड़ी सदस्य थे - **प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका (कलकत्ता पश्चिम), ईश्वरदास जालान (इसी क्षेत्र से बाद में निर्वाचित), देवीप्रसाद खेतान (इंडियन चेम्बर ऑफ कामर्स), राय बहादुर मंगतूलाल तापड़िया (मारवाड़ी एसोशिएसन) तथा आनन्दीलाल पोद्दार (मारवाड़ी एसोशिएसन)**। द्वितीय विधान सभा का गठन १९४६ में हुआ जिसमें भी मारवाड़ी सदस्यों की संख्या ५ पर ही रही - **ईश्वरदास जालान, बसन्तलाल मुरारका, देवीप्रसाद खेतान, आनन्दीलाल पोद्दार एवं नरेन्द्र सिंह सिंधी**। इस बीच विधान परिषद में जिन्हें मनोनीत किया गया उनमें थे **एच.पी. पोद्दार, मंगतुराम जयपुरिया एवं विजय सिंह नाहर**।

स्वतंत्रता के उपरान्त

१९५२ से २००६ के बीच १४ दफा विधान सभा के चुनाव बंगाल में हुए हैं एवं इनमें लगातार मारवाड़ी प्रतिनिधियों में कमी आयी है। १९५२ में **बसन्तलाल मुरारका, जयनारायण शर्मा, ईश्वरदास जालान, आनन्दीलाल पोद्दार एवं रतमल अग्रवाल** सहित ५ उम्मीदवार विजयी हुए वहीं १९६२ में सिर्फ तीन – **आनन्दीलाल पोद्दार, ईश्वरदार जालान एवं विजय सिंह नाहर** रह गये। १९६७ में २८० विधायकों में चार – **राजेन्द्र सिंह सिंघी, राजेन्द्र कुमार पोद्दार, ईश्वदास जालान एवं विजय सिंह नाहर** थे। १९६९, १९७१ एवं १९७२ में **श्री देवकीनन्दन पोद्दार, रामकृष्ण सरावगी एवं विजय सिंह नाहर** निर्वाचित हुए जबकि १९७७ में कोई नहीं। १९८२, १९८७, १९९१ एवं १९९६ में केवल दो – **देवकीनन्दन पोद्दार एवं राजेश खेतान** निर्वाचित हुए। **२००१ में** केवल **श्री सत्यनारायण बजाज**। २००६ की विधान सभा में २९४ की कुल संख्या में एकमात्र मारवाड़ी विधायक **श्री दिनेश बजाज हैं।**

संसद सदस्य

बंगाल से लोकसभा में निर्वाचित होने का सौभाग्य १९५२ से २००५ के बीच पिछले ५० से अधिक वर्षों में सिर्फ एक मारवाड़ी **विजय सिंह नाहर** को १९७७ में प्राप्त हुआ। हालांकि राज्यसभा में निर्वाचित सदस्यों की संख्या कुछ बेहतर है, **बेनीप्रसाद अग्रवाल (१९५२), पन्नालाल सरावगी (१९६२), रामकुमार भुवालका (१९६४), सरला माहेश्वरी (१९९०)**। १९६४ से १९९० के २६ वर्षों में कोई भी मारवाड़ी पश्चिम बंगाल विधान सभा से राज्यसभा के लिये निर्वाचित नहीं हुआ।

यह एक तथ्य है कि एक तरफ जहां राज्य में मारवाड़ी जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई है वहीं राजनीति में प्रतिनिधित्व में कमी आयी है। इसके लिये क्या हमारी सक्रिय राजनीति के प्रति उदासीनता दायी है या समाज में राजनैतिक चेतना का अभाव। राजनैतिक चेतना से तात्पर्य केवल चुनाव में भागीदारी ही नहीं है वल्कि मतदाता सूची में अपने को शामिल करना, मतदान करना, उम्मीदवारों को प्रोत्साहित एवं समर्थन प्रदान करना, महत्वपूर्ण राजनैतिक प्रश्नों पर जो समाज एवं देश के हितों को प्रभावित करते हैं उन पर अपना मत व्यक्त कर जनमत तैयार करना भी है। राजनैतिक रूप से सचेत एवं जागरुक नागरिक समाज एवं देश को सही ताकत एवं दिशा प्रदान करते हैं।

नेपाल में व्यापारी की हत्या

मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रतिरोध

अलीपुर स्थित नेपाली दूतावास में नेपाल के कोलकाता स्थित कार्यकारी कन्सुल जनरल श्री हिमल थापा को ज्ञापन सौंपते हुये सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सन्तोष सराफ, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री कैलाशपति तोदी एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष रामपाल अग्रवाल 'नूतन'

कोलकाता। नेपाल में मारवाड़ी व्यापारियों पर बढ़ते हमले एवं हत्या को लेकर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के एक प्रतिनिधिमण्डल ने अलीपुर स्थित नेपाली दूतावास जाकर नेपाल के कोलकाता स्थित कार्यकारी कन्सुल जनरल श्री हिमल थापा से मुलाकात की वहां हाल ही में काठमांडू के खीचापोखरी इलाके में मारवाड़ी व्यापारी अंजनी कुमार चाचन की दिनदहाड़े गोली मार कर हुई हत्या का प्रतिरोध करते हुए ज्ञापन सौंपा। गौरतलब है कि यहां यह तीसरी व्यापारी की हत्या की घटना घटी है। प्रतिनिधिमण्डल में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष रामअवतार पोद्दार, महामंत्री संतोष सराफ, संयुक्त मंत्री कैलाशपति तोदी, सम्मेलन के कार्यकारिणी सदस्य एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष रामपाल अग्रवाल 'नूतन' शामिल थे। प्रतिनिधिमण्डल ने नेपाल में मारवाड़ी समुदाय के साथ घट रही घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए नेपाल सरकार से इस सम्बंध में आवश्यक एवं तुरंत कार्यवाई की मांग की। श्री शर्मा ने कहा है कि नेपाल पड़ोसी मित्र देश है एवं दोनों देश के बीच सदियों पुराने भाईचारे के गहरे सम्बन्ध हैं। ऐसे में ऐसी घटनायें चिन्ताजनक हैं। श्री कानोड़िया ने बताया कि श्री थापा ने उनकी बातों को गौर से सुना और यह आश्वासन दिया कि वे उनकी चिन्ताओं को नेपाल सरकार तक पहुँचायेंगे। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस सम्बन्ध में नेपाल सरकार सभी आवश्यक कार्यवाही करेगी।

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
• Front-lit-flex
• Back-lit-flex
• Woven P/E
• Self Adhesive vinyl
• Building wrap
• One way vision
• Vehicle / fleet graphics
• Floor and wall graphics
• Reflective Signage
• Frosted vinyl
• Canvas
• Translite
• Photo realistic poster paper
• Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of -the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

मारवाड़ी सम्मेलन सदस्यों द्वारा

हजारे के समर्थन में विजय जुलूस

गांधीवादी कार्यकर्त्ता अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार के खिलाफ आमरण अनशन के समर्थन में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भी पार्क स्ट्रीट में गांधी मूर्ति के पास धरना दिया। पत्रकारों से बात करते हुए सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा एवं उपाध्यक्ष राम अवतार पोद्दार ने कहा कि भ्रष्टाचार से पूरे देश की जनता त्रस्त है। भ्रष्टाचार के खातमे के लिये राजनैतिक दलों को परे रख कर आम नागरिकों के संगठन को आगे आना होना। इस दिशा में हजारे की पहल सराहनीय है। हम समर्थक करते हैं।

गांधीवादी अन्ना हजारे की मांग मानते हुए सरकार के लोकपाल विधेयक का मसौदा तैयार करने वाली एक संयुक्त समिति के गठन के लिये अधिसूचना जारी किये जाने के उपलक्ष में कोलकाता में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने अन्य कई सदस्यों के साथ मिलकर महाजाति सदन से पार्क स्ट्रीट गांधीजी की मूर्ति तक जुलूस निकाला। इस विधेयक को लेकर पूरा देश अन्ना के समर्थक में है। इस विधेयक पर केन्द्र सरकार की रजामंदी से ही आंदोलन पूरा नहीं हुआ है। इस बिल को लोकसभा में पारित करना मुख्य उद्देश्य है।

आमार आसाम पत्रिका

समाज की महिलाओं के विरुद्ध अशोभनीय समाचार का विरोध

गुवाहाटी से प्रकाशित दैनिक असमिया पत्र "आमार असम" के साथ प्रकाशित आमार असम पूर्वांचल वसन्त विशेष में श्री ऐश्वर्य कारोटी द्वारा लिखित 'शेष उपहार' नामक लेख में मारवाड़ी समाज की महिलाओं के बावत अशोभनीय एवं अमर्यादित भाषा का उपयोग किया गया है। १२ अप्रैल २०११ को प्रकाशित इस लेख के विरुद्ध मारवाड़ी सम्मेलन की जोरहाट शाखा के अध्यक्ष बाबूलाल गगड़ एवं मंत्री अनिल केजरीवाल ने एक पत्र लिखकर प्रकाशक जी. एल. प्रकाशन लिमिटेड के प्रवन्ध निर्देशक श्री जी. एल. अग्रवाल को विरोध व्यक्त किया है।

पत्र में कहा गया है कि इस लेख से "हमारे समाज की मान मर्यादा एवं प्रतिष्ठा काफी आहत हुयी है। इस तरह ही भाषा का प्रयोग लेखक की हमारे समाज के प्रति नकारात्मक मानसिकता एवं भेदभाव को परिलक्षित करता है। खासकर इस तरह की अमर्यादित भाषा का उपयोग आपके माध्यम से ही रहा है तो मन व्यथित हो उठता है। आपने समय-समय पर अपने समाज के लिये काफी आवाज उठाई है परन्तु इस तरह के उद्‌गार आपके माध्यम द्वारा होना दुर्भाग्य जनक है। ..... आशा करते हैं कि इस लेख के लेखक अपनी गल्ती सुधारेंगे एवं हमारे समाज से माफी मांगेंगे।"

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन लेख की भाषा की निन्दा करते हुये घोर विरोध व्यक्त करता है एवं इसे आपसी भाईचारे एवं समरसता विरोधी मानता है।

मानव संसाधन और अत्याधुनिक तकनीक के प्रयोग महेश बैंक के विकास के मूल आधार – रमेश कुमार बंग

महेश बैंक की ३४वीं मोती नगर शाखा के उद्घाटन पर अध्यक्षीय भाषण देते हुए बैंक के चेयरमैन रमेश कुमार बंग, शाखा का उद्घाटन करते हुए आन्ध्र प्रदेश सरकार के सहकारिता मंत्री कासू बैंकट कृष्ण रेड्डी, मंचासीन मुख्य अतिथि रिजनल डायरेक्टर भारतीय रिजर्व बैंक श्री ए.एस राव, सम्मानिय अतिथि श्रीमती नंदा एस. दवे, महाप्रबंधक रिजर्व बैंक, यूबीडी, मानम अंजनेयुलु – अध्यक्ष आ.प्र. को – ऑपरेटिव अर्बन बैंक्स एण्ड क्रेडिट सोसाइटीज एसोसिएशन एवं बैंक के पदाधिकारी।

दि ए.पी महेश को – आपॅरेटिव अर्बन बैंक लिमिटेड की ३४ वीं शाखा का उद्घाटन बोराबण्डा के निकट स्थित मोती नगर में आन्ध्र प्रदेश के सहकारिता मंत्री कासू वैंकट कृष्णा रेड्डी ने किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में महेश बैंक की प्रगति की सराहना करते हुए सुझाव दिया कि बैंक को वदलते परिवेश में समाज के निम्न मध्यम वर्गीय लोगों के उत्थान पर और भी अधिक ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आर.वी.आई हैदराबाद के क्षेत्रीय निदेशक ए.एस. राव ने कहा कि महेश बैंक अनेक केन्द्रों पर न केवल अपनी उपस्थित का विस्तार कर रही है वरन् अपनी कार्य शैली की विशिष्ट छाप भी छोड़ रही है। उन्होंने आगे कहा कि बैंक ने अपनी उत्कृष्ट कार्य प्रणाली कारपोरेट प्रशासन औऱ ग्राहक सेवा के द्वारा नगरीय सहकारी बैंकों के लिए अनुकरणीय प्रतिमान स्थापित किये हैं। शाखा खोलने के लिए मोदीनगर का चयन प्रवधन की दूरदृष्टि का द्योतक है।

ए.पी को ऑपरेटिव अर्बन बैंक्स एण्ड क्रेडिट सोसायिटीज एसोसिएशन के मानद अध्यक्ष मानस आजनेयुलु ने कहा कि इतर सहकारी बैंकों को महेश बैंक के कार्यानुशासन, प्रगति कि प्रतिवद्धता और स्टॉफ प्रशिक्षण जैसी आधारभूत विशिष्टताओं का अनुकरण करना चाहिए। आज जवकि नगरीय सहकारी बैंक भूमण्डलीकरण जन्य रिक्तता और अन्तर को मिटाने का कार्य कर रहे हैं, ऐसे में महेश बैंक राज्य के निम्न मध्य एवं मध्यवर्गीय समाज की वेहतरी के लिए उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। उन्होंने राज्य सरकार और नियामक संस्थाओं से अर्बन सहकारी बैंकिंग क्षेत्र को और अधिक सुविधाएँ मुहैया कराने का आग्रह किया जिससे कि ये अपने सामाजिक दायित्वों का और अधिक प्रभावी ढंग से निर्वाह कर सकें।

आर.बी.आई., हैदरावाद की महा प्रवन्धक श्रीमती नन्दा देव ने अपने सम्बोधन में कहा कि महेश बैंक नगरीय सहकारी बैंकिंग क्षेत्र के मध्य एक विकास गाथा के रूप में स्थापित हुआ है। प्रदेश की सभी १०६ बैंको के कुल व्यवसाय की तुलना में महेश बैंक की व्यापारिक भागीदारी और वर्ष दर वर्ष बढ़ता लाभ और ग्राहक सेवा विस्तार इस विकास गाथा को स्वयं सिद्ध करते हैं।

इससे पूर्व महेश बैंक चेयरमैन रमेश कुमार बंग ने अपने अध्यक्षीय उद्वोधन में नियामक संस्थाओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए बैंक की प्रगति और उपलब्धियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया ने बैंक के आग्रह को स्वीकार करते हुए बैंक को सम्पूर्ण महाराष्ट्र, राजस्थान और गुजरात में शाखाओं के विस्तार की अनुमति प्रदान की है। इससे निश्चित ही बैंक अपने पूर्व निर्धारित मिशन २०२० को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होगा। उन्होंने बताया कि मानव संसाधन और अत्याधुनिक तकनीकी के मध्य सापेक्षिक विकासात्मक सम्वन्ध ही महेश बैंक की निरंतर प्रगति के मूल आधार हैं। बैंक ने हाल ही में म्यूच्यूअल फण्ड वितरण हेतु रिलायन्स म्यूच्यूअल फण्ड लिमिटेड से अनुवन्ध किया है। इससे ग्राहक अपनी बचत निधि का लाभकारी नियोजन कर सकेंगे। उन्होंने अन्त में जानकारी दी कि शीघ्र ही बंजारा हिल्स और अत्तापुर में बैंक की शाखाएँ खोली जायेंगी।

समाज बहरा-अंधा-नंगा

– प्रकाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक विश्वामित्र

समाज मेरा क्या कर लेगा? मेरा समाज से क्या सरोकार है? समाज और सामाजिक चेतना की मैं परवाह नहीं करता। सामाजिक नियमों की ऐसी की तैसी! भूखे पेट था तव समाज और सामाजिक नियमों से तो पेट नहीं भर गया। आज मोटरगाड़ी है, मकान है, व्यवसाय है, खून-पसीना की कमाई है तव आप समाज का भय दिखाते हैं? हम इन्हें नहीं मानते। समाज वहरा होता जा रहा है। समाज नंगा होता जा रहा है। समाज अंधा होता जा रहा है। सामाजिक नियमों की खुलेआम अवहेलना हो रही है, सामाजिक कायदे-कानूनों को भुला दिया जा रहा है। लक्ष्मण रेखाओं का खुले आम उल्लंघन हो रहा है। सभी अपने सुविधानुसार बनाए गए नियमों को ही सामाजिक नियम कानून की संज्ञा देने लगे हैं। अपने वहशियाना मनोवृत्तियों को खुलेआम प्रदर्शित किया जा रहा है। निःसकोच गलत-सलत वातों को, इच्छाओं को दिखाया जा रहा है और इसे ही सामाजिक नियम कानून के दायरे में घोषित कर दिया गया है। पुरानी पीढ़ी की बातों को, नियम कानून को, सीमाओं को, 'आउट ऑफ डेट' करार दिया गया है। उन पोंगापंथियों की कौन तो चर्चा करे, कौन तो उनकी बातों को दुहराए। सभी तो आज हवा के प्रतिकूल हैं। अटकावे में कौन आए। किसे वन्दिश पसन्द है। कौन खुली हवा के वदले वंद कमरे की घुटी हवा में रहना चाहेगा? सभी तरफ तो खुले वातावरण, खुल खेलने की चर्चाएं हैं। खुलापन तो आज की हवा है। पुरानी वातें, पुरानी कायदे तो महाभारत काल के लिए थे जव पिता को 'पिताश्री' और माता को 'माताश्री' कहा जाता था। मम्मी-डैडी, 'हाय-मिल' और 'हाय फिल' के जमाने में पुराने नियम-कानून कैसे और किसके गले से उतरें? सभी तो चोंगा तार फेंकने को व्याकुल हैं। सभी दौड़ में आगे-आगे रहना चाहते हैं। किसे सोचने की फुरसत है? किसे समझने की चिन्ता है?

समाज को तोड़ना-मरोड़ना अपने हिसाव से, अपनी सुविधा से कौन नहीं कर रहा है। सभी दुधारू गाय को दुहना जानते हैं पर 'चारा' कौन खिलाए? सभी मतलव के पुजारी हैं सभी एकतरफा मतलब की राह में हैं। समाज सुस्त रहेगा तो हम सुस्त रहेंगे, इतनी चिन्ता किसे है। अपने को सुस्त रखना है समाज जाए भाड़ में। अपने को नियम कानून उन हदों तक ही मानना है जहां तक अपना मतलव निकल जाए। एक कदम भी आगे नहीं, पीछे नहीं। इंच पर भी उधर नहीं। आखिर समाज अपने से ही तो बनता है फिर अपनी ही चिन्ता करें। दूसरे की दूसरे करेंगे।

सभी कुछ देख-सुनकर, आंखों पर पट्टी बांध कर चुपचाप बैठने में कहां तक भलाई है। कहां तक नियमों के उल्लंघन बर्दाश्त किए जा सकते हैं। खुली हवा, धोखे के पर्दे के पीछे कब तक उनका गुणगान चलेगा। 'लक्ष्मण रेखाओं' को तोड़ने की कब तक वारदातें होंगी। समाज की छाती पर खुलेआम मूंग दलने की घटनाओं को कब तक, किस हद तक वर्दाश्त किया जा सकेगा? अपने स्वार्थ पर बने नियम-कानूनों, वाजिव-गौरवाजिव हरकतों को कब तक और क्यों वर्दाश्त किया जाएगा। नंगा-नाच, वहशियाना हरकतों, रिश्तों और नातों की खुली अवहेलना, सीमा कहां है? क्यों सहा जाए? किसके लिए डंके की चोट पर गलत-सलत सभी कुछ कर रहा है?

हाथ पकड़ना होगा, मुंह वन्द करवाना होगा, भूले-भटके को रास्ता दिखाना होगा। सुवुद्धि देनी होगी, दुर्वुद्धि को भगाना होगा। केवल हाथ पर हाथ धरे रहना ही रास्ता नहीं है।

(विश्वामित्र से साभार)

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति

डॉ. राम मनोहर लोहिया शताब्दि जयंती-सह व्याख्यान माला

विहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति द्वारा डॉ. राम मनोहर लोहिया शताब्दि जयंती-सह व्याख्यान माला समारोह दिनांक **१० अप्रैल २०११** (रविवार) को अपराह्न **३.०० बजे** से आयोजित किया गया, इसी आयोजन में माध्यमिक परीक्षा २०१० में सर्वोपरी अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्रा को भी पुरस्कृत किया गया एवं श्रीमती डॉ. उषा पोद्दार, पटना सिटी को स्व. मंजु गुप्ता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

Experience Security

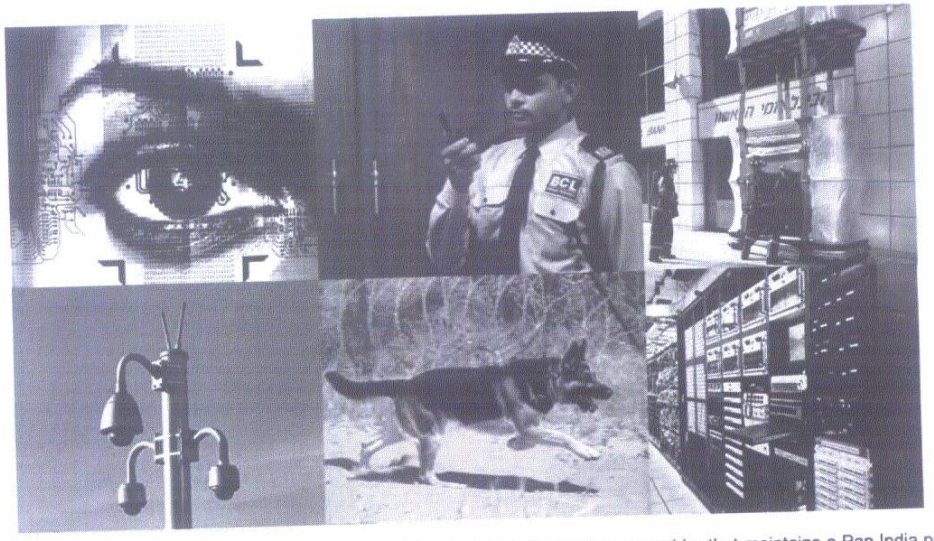

BCL Secure Premises Pvt. Ltd. (BCL SP) is a leading Integrated Security Solutions provider that maintains a Pan India presence . Aimed at providing world class security solutions to its clients, BCL SP is an **ISO 9001:2000** certified organisation with a constant endeavour to upgrade the quality of its resources and infrastructure. Our scope of work includes:

- » Guarding Solutions including a range of specialisations such as Hotel Guards, Mall Guards, Hospital Security, PSOs etc
- » Electronic Security Services
- » Facility Management Services
- » Blast Effect Protection and Mitigation
- » Maritime Security Services
- » Investigations
- » Canine (K9) Services
- » X-Ray Systems
- » Intelligent Evacuation Systems
- » Fire Prevention / Protection
- » ESCAPE Rescue Systems for high rise buildings
- » Training
- » Consultancy Services

BCL SP has on board security specialists who have headed premier security agencies in Government (MHA) and armed forces of the nation. At BCL SP, it is our endeavour to understand the unique security needs of each client, and to fulfill these utilising the latest technology and expertise. We are emerging as one of the most competitive service providers in physical and technical security.

BCL SP can take up projects on a turn key basis right from conception to final execution. We also provide solutions on **Lease Basis**.

bclsecurepremises

ISO 9001:2000 Certified

Global Strategic Partners and Alliances

DiagNose · EMESCO Emergency & Security Solutions · ESCAPE Rescue Systems · GILARDONI · KCA · VERINT Powering Actionable Intelligence

Please feel free to contact us at

222, Mall Road
Flower Valley, Vasant Kunj
New Delhi - 110070

Ph: +91 11 261 23514
Fax: +91 11 26123816
Toll Free: 1800 118 383

Or email us at: info@securepremises.com

www.securepremises.com

© Copyright BCL Secure Premises Pvt. Ltd. 2010